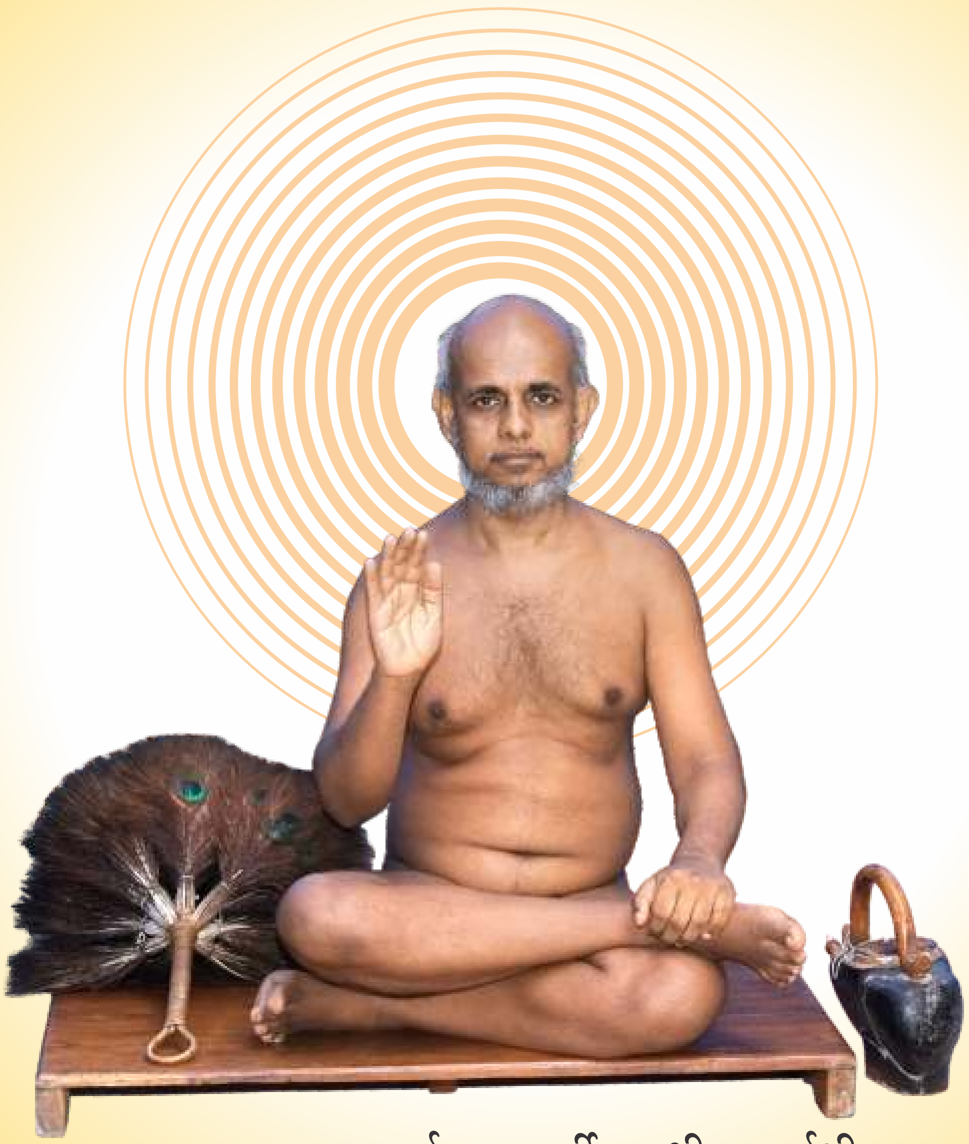

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि–परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19–03–1971 * मुनिदीक्षा–11–05–1989 * आचार्यपद– 20–06–2004

पट्टाधीशपद– 24–12–2010 (20–06–2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः–

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी–जुलाई 2004) (अक्षयज्योति–अक्तूबर 2004)

पंचबालयति विधान

रचयित्री :
पूज्या गणिनी
आर्यिकाश्री ज्ञानमती माताजी

प्रकाशक
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर–मेरठ (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

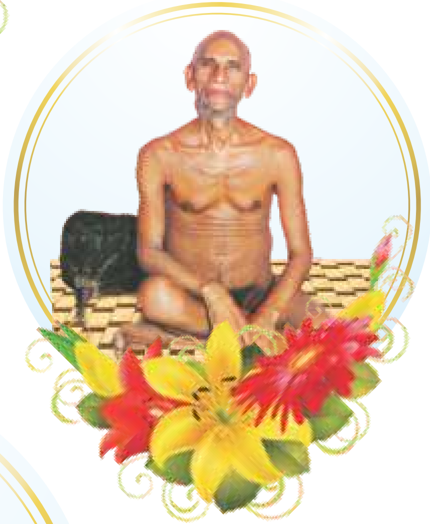

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

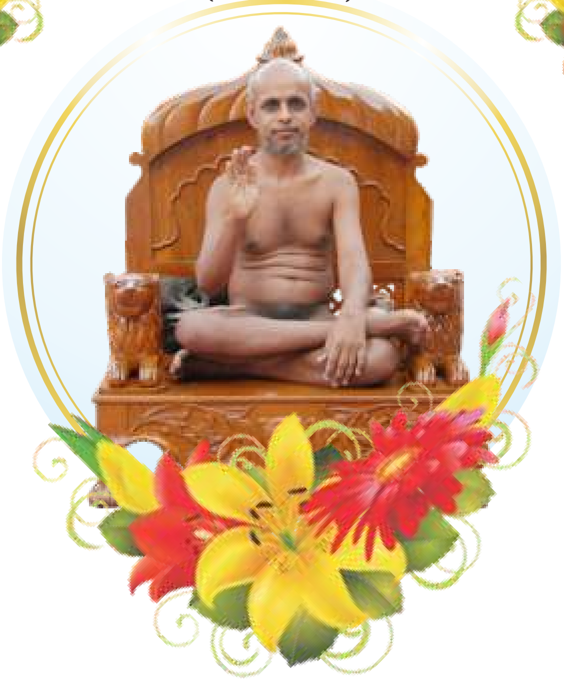

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 401
ISBN-978-93-82071-87-7

पंचबालयति विधान

–रचयित्री–

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी के 80वें जन्मजयंती वर्ष सन् 2013-2014 (अमृत महोत्सव) के अन्तर्गत जम्बूद्वीप के वर्तमान पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी के तृतीय पीठाधीश पदारोहण अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
www.encyclopediaofjainism.com
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

प्रथम संस्करण	वीर निर्वाण संवत् 2540	मूल्य
1100 प्रतियाँ	मगसिर कृ. 10	30/-रु.
	28 नवम्बर 2013	

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: मार्गदर्शन :-

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

-: निर्देशक एवं सम्पादक:-

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

-: प्रबंध सम्पादक :-

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–स्वस्तिश्री पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

ऊँ नमो मंगलं कुर्यात् , ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

जैन परम्परा में उपयोग तीन प्रकार का माना गया है। अशुभोपयोग शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग। इन तीनों उपयोगों में से कोई न कोई उपयोग प्रतिक्षण जीव में चला ही करता है जिसमें से अशुभोपयोग तो दुर्गति का कारण पाप रूप है जो कि सर्वथा हेय है। बात है उपादेयता की, शेष दोनों शुभोपयोग एवं शुद्धोपयोग उपादेय है। चूँकि गृहस्थ श्रावक के शुभोपयोग के अलावा शुद्धोपयोग हो नहीं सकता, इसलिए शुभोपयोग ही उपादेय ठहरता है। शुद्धोपयोग वीतराग चारित्र से अविनाभावी है और वीतराग चारित्र निर्ग्रन्थ मुनियों में ही संभव है। अतः श्रावकों को प्रयत्नपूर्वक शुभोपयोग की भावना में ही प्रवर्तन करना चाहिए। पूजन–पाठ, सामायिक, दान आदि समस्त धार्मिक क्रियायें पुण्यरूप हैं और शुभोपयोग हैं इसलिए श्रावकों द्वारा शांतिविधान, सिद्धचक्र विधान आदि मण्डल विधान करने की परम्परा प्राचीनकाल से चली आ रही है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परम पूज्य चारित्रचन्द्रिका गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, शांतिविधान, ऋषिमण्डल आदि अनेकों छोटे-बड़े विधानों की रचना की है। उसी श्रृंखला में यह 'पंचबालयति विधान' पूज्य माताजी ने रचकर नूतन कृति के रूप में हमें प्रदान किया है। इसमें पाँच बालयति तीर्थंकर श्री वासुपूज्य, मल्लिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ एवं महावीर स्वामी की पूजा है और अंत में प्रज्ञाश्रमणी पूज्य आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित भगवान वासुपूज्य के पंचकल्याणक से पवित्र चम्पापुरी तीर्थक्षेत्र की पूजा है।

महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर पूज्य माताजी की प्रेरणा से महावीर धाम परिसर में दिल्ली निवासी श्री महेशचंद जैन एवं श्रीमती संतोष जैन परिवार की ओर से पंचबालयति मन्दिर का निर्माण हुआ है। यह विधान रोग, शोक, दारिद्र्य, दुःख, संकट को हरने वाला है। इस विधान को करके सभी भव्य जीव सुख, शान्ति, समृद्धि को प्राप्त करें, यही मंगलभावना है। वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करे, पूज्य माताजी स्वस्थ एवं दीर्घायु प्राप्त करें, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

प्रस्तावना

–ब्र. कु. इन्दु जैन (संघस्थ)

जैनशासन में माना गया है कि काल परिवर्तन के क्रम में प्रत्येक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी के चतुर्थ काल में चौबीस तीर्थंकर होते रहे हैं, होते हैं और आगे भी होवेंगे, इस प्रकार अनन्तानंत चौबीसी हो चुकी हैं और आगे भी होंगी। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल चल रहा है जो कि अनेक अवसर्पिणी एवं उत्सर्पिणी के व्यतीत हो जाने पर आता है, इस काल में अनेक अघटित घटनाएं घटती हैं। वर्तमान में हुण्डावसर्पिणी काल चल रहा है। यूं तो प्रत्येक काल में चौबीसों तीर्थंकर शाश्वत जन्मभूमि अयोध्या में जन्म लेकर शाश्वत निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर से मोक्षपद प्राप्त करते हैं किन्तु वर्तमान में कालदोषवश ही मात्र पांच तीर्थंकर अयोध्या नगरी में जन्मे और शेष 19 तीर्थंकर अलग–अलग स्थानों पर जन्में, साथ ही बीस तीर्थंकरों ने सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त किया और 4 तीर्थंकरों ने अन्य स्थानों से मुक्ति प्राप्त की। इन चौबीस तीर्थंकरों में से पांच तीर्थंकर बालयति अर्थात् बाल ब्रह्मचारी रहे तथा शेष ने विवाह कर राज्यसुख का उपभोग कर वैराग्य को प्राप्त होकर दीक्षा धारण की।

प्रथम बालयति तीर्थंकर वासुपूज्य ने चंपापुरी के राजा वसुपूज्य की महारानी जयावती की पवित्र कुक्षि से जन्म लिया, इन भगवान के पांचों ही कल्याणक चंपापुरी में हुए। द्वितीय बालयति तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ ने मिथिलापुरी में कुंभराज की प्रजावती रानी से जन्म लिया और सम्मेदशिखर से मोक्ष प्राप्त किया। तीसरे बालयति तीर्थंकर श्री नेमिनाथ हुए जिन्होंने शौरीपुर के महाराजा समुद्रविजय की महारानी शिवादेवी से जन्म लिया और विवाह के समय पशुक्रन्दन से वैराग्य को प्राप्त होकर सहस्राम्र वन में दीक्षा धारण कर ली, गिरनार पर्वत पर उन्हें दिव्य केवलज्ञान और मोक्ष की प्राप्ति हुई, चौथे बालयति तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ ने वाराणसी नगरी में अश्वसेन राजा की वामादेवी महारानी से जन्म लेकर अश्ववन में दीक्षा ली, अहिच्छत्र में दिव्य केवलज्ञान हुआ और सम्मेदशिखर से मोक्ष पधारे तथा अन्तिम बालयति तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी ने बिहार प्रान्त की कुण्डलपुरी नगरी में राजा सिद्धार्थ की त्रिशला रानी से जन्म लिया, जृम्भिका ग्राम के ऋजुकूला नदी के तट पर इन्हें दिव्य केवलज्ञान हुआ और पावापुरी सिद्धक्षेत्र से मोक्ष पधारे।

उन्हीं पंच बालयतियों की आराधना कर अपनी कर्मश्रृंखला को काटने हेतु इस युग की प्रथम बालब्रह्मचारिणी, साक्षात् शारदास्वरूपा परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने हमें यह सुन्दर ''पंच बालयति विधान'' नामक कृति प्रदान की है, भक्तिमार्ग की श्रृंखला में पूज्य माताजी द्वारा बनाए गए विधान आज भारत के कोने-कोने में भक्ति की गंगा बहाकर भक्तों को धर्मामृत पान करा रहे हैं। **इस विधान में कुल 6 पूजाएँ हैं जिनमें एक समुच्चय पूजा है तथा 5 बालयतियों की 5 पूजा, पुनः 108-108 मंत्र तथा एक-एक पूर्णार्घ्य व जयमाला है। इस प्रकार मण्डल पर चढ़ाने वाले कुल 540 अर्घ्य एवं 5 पूर्णार्घ्य हैं, प्रत्येक पूजन के बाद उन-उन तीर्थंकरों के गुणानुवाद रूप सुन्दर एवं सारगर्भित जयमाला है तथा अन्त में बड़ी जयमाला है।** इन सबके माध्यम से आप सभी तीर्थंकरों की महिमा से परिचित होकर उनकी भक्ति करते हुए अपूर्व शक्ति की प्राप्ति कर स्वयं में परमात्म पद को प्रगट करने में सक्षम हों यही जिनेन्द्रदेव से मंगल प्रार्थना है।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम-क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा-भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ, सम्मेदशिखर में आचार्य श्री शांतिसागर धाम इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार, ऑनलाइन जैन इनसाइक्लोपीडिया आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

—कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं-

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत प्रतिवर्ष लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है- कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, तीन लोक रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, चौबीस तीर्थंकर मंदिर एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन किये जाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

12. गणिनी ज्ञानमती दिगम्बर जैन पत्राचार परीक्षा केन्द्र का संचालन।

13. इंटरनेट पर जैनधर्म के इन्साइक्लोपीडिया (www.encyclopediaofjainism. com) का निर्माण।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य नंद्यावर्त महल तीर्थ, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ तथा महावीर जी अतिशय क्षेत्र के महावीर धाम परिसर में निर्मित पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर का संचालन होता है। वर्तमान में इस संस्थान के अन्तर्गत सम्मेदशिखर जीतीर्थ पर "आचार्य श्री शांतिसागर धाम" का निर्माण प्रारंभ किया जा रहा है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	मंगलाचरण	1
2.	पंचबालयति पूजा	2
3.	श्री वासुपूज्य जिनपूजा	6
4.	श्री मल्लिनाथ जिनपूजा	25
5.	श्री नेमिनाथ जिनपूजा	44
6.	श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा	64
7.	श्री महावीर जिनपूजा	85
8.	प्रशस्ति	108
9.	चम्पापुरी तीर्थ पूजा	109
10.	मंगल आरती	116

मण्डल का नक्शा

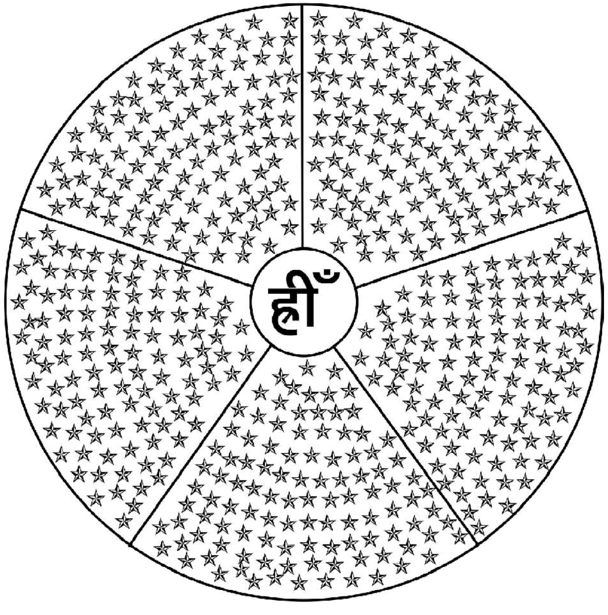

कुल अर्घ्य-540, पूर्णार्घ्य-5, जयमाला-7, बड़ी जयमाला 1

पंचबालयति विधान

– मंगलाचरण –

अर्हन्तो मंगलं कुर्युः, सिद्धाः कुर्युश्च मंगलम्।
आचार्याः पाठकाश्चापि, साधवो मम मंगलम्।।1।।

वासुपूज्यो जगत्पूज्यः, पूज्यपूजातिदूरगः।
पूज्यो जनः प्रसादात्ते, भवेत्तुभ्यं नमो नमः।।2।।

कर्ममल्लभिदे तुभ्यं, मल्लिनाथ ! नमो नमः।
स्वमोहमल्लनाशाय, भववल्लिभिदे नमः।।3।।

राजीमतीं परित्यज्य, महादयार्द्रमानसः।
लेभे सिद्धिवधूं सिद्ध्यै, नेमिनाथ! नमोऽस्तु ते।।4।।

सर्वंसहो जिनः पार्श्वो, दैत्यारिमदमर्दकः।
सहिष्णुतां प्रपुष्यान्मे, नित्यं तुभ्यं नमो नमः।।5।।

वर्धमानो महावीरो–ऽतिवीरो सन्मतिर्जिनः।
वीरनाथो नमस्तुभ्यं, सन्मतिं वितनोतु मे।।6।।

वासुपूज्यस्तथा मल्लि–र्नेमिः पार्श्वोऽथ सन्मतिः।
कौमाराः पंच तीर्थेशा–स्तेभ्यो मेऽनन्तशो नमः।।7।।

अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

पूजा नं. १

पंचबालयति पूजा

– अथ स्थापना –

(तर्ज–मेरा नम्र प्रणाम है..........)

वंदन शत शत बार है,
पंचबालयति तीर्थंकर को वंदन शत शत बार है।
जिनका नाम मंत्र जपने से होते भवदधि पार हैं।
पंचबालयति ....।।टेक.।।

वासुपूज्य जिन मल्लिनाथ प्रभु नेमिनाथ तीर्थेश हैं।
पार्श्वनाथ महावीर जिनेश्वर बालयती परमेश हैं।।
बालब्रह्मचारी रह करके दीक्षा ली सुखकार है।
पंचबालयति ....।।1।।

द्विविध रत्नत्रय धारण करके, धरा दिगम्बर वेष है।
आत्मध्यान पीयूष पानकर, हरा मृत्यु का क्लेश है।
विविध तपश्चर्या कर करके, भरा सुगुण भंडार है।।
पंचबाल.....।2।।

आह्वानन स्थापन करके प्रभो! आपका यजन करें।
हृदय कमल में आप विराजो, मोहतिमिर का हनन करें।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, हम करें भक्ति साकार है।
पंचबालयति तीर्थंकर को वंदन शत शत बार है।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य–मल्लिनाथ–नेमिनाथ–पार्श्वनाथ–महावीरस्वामी–पंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य–मल्लिनाथ–नेमिनाथ–पार्श्वनाथ–महावीरस्वामी–पंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य–मल्लिनाथ–नेमिनाथ–पार्श्वनाथ महावीरस्वामी–पंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक–

गंगा नदि को जल स्वच्छ, कंचन शृंग भरूं।
त्रयधारा देते चर्ण, भव भव त्रास हरूँ।।
श्री बालयती तीर्थेश, प्रभु के गुण गाऊं।
परमानंदामृत हेतु, पूजूं हरषाऊं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन गंध, प्रभु के चरण जजूँ।
पाऊँ निज अनुभव गंध, जिनवर शरण भजूँ।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल अति धवल अखंड, धोकर थाल भरूँ।
होवे मुझ ज्ञान अखंड, तुम ढिग पुंज धरूँ।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं वकुल सुगंधित पुष्प, लाऊँ चुन चुन के।
पाऊँ निज समरस सौख्य, प्रभु चरणों धर के।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू है मोतीचूर, अर्पूं तुम सन्मुख।
हो क्षुधा वेदनी दूर, पाऊँ स्वातम सुख।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति प्रजाल, आरति करते ही।
नशे मोह तिमिर का जाल, ज्योती प्रगटे ही।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध सुगंधित धूप, अगनी में खेऊँ।
उड़ जावे चहुँदिश धूम्र, तुम पद को सेऊँ।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यःअष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर सेब बादाम, फल से यजन करूँ।
हो निजपद में विश्राम, भव भव भ्रमण हरूँ।।श्री.।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल आदिक अर्घ्य बनाय, रत्न मिलाऊँ मैं।
सिद्धों के चरण चढ़ाय, गुणमणि पाऊँ मैं।।
श्री बालयती तीर्थेश, प्रभु के गुण गाऊं।
परमानंदामृत हेतु, पूजूं हरषाऊं।।

ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

नीर लाया पयोसिंधु से भृंग में।
नाथ के पाद में तीन धारा करूँ।।
विश्व में शांति हो सर्व विपदा टलें।
धर्म पीयूष मिल जाय तुम भक्ति से।। शांतये शांतिधारा।
मल्लिका केवड़ा पुष्प सुरभित लिये।
नाथ के पाद पकंज चढ़ाऊँ अबे।।
सौख्य भंडार पूरो मिटे व्याधियाँ।
स्वात्म निधियाँ मिले फैले कीर्ति यहाँ।। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीपंचबालयतितीर्थंकरेभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

लोकोत्तर फलप्रद तुम्हीं, कल्पवृक्ष जिनदेव।
पंचबालयति आपको, नमूँ करूं नित सेव।।1।।

–गीता छंद–

जय पांच तीर्थंकर प्रभो ! तीनों जगत में ख्यात हो।
जय जय अखिल संपत्ति के, भर्ता भविकजन नाथ हो।।
लोकांत में जा राजते, त्रैलोक्य के चूड़ामणी।
जय जय सकल जग में तुम्हीं, हो ख्यात प्रभु चिंतामणी।।2।।
एकेन्द्रियादिक योनियों में, नाथ! मैं रुलता रहा।
चारों गती में ही अनादी, से प्रभो! भ्रमता रहा।।
मैं द्रव्य क्षेत्र रु काल भव, औ भाव परिवर्तन किये।
इनमें भ्रमण से ही अनंतानंत काल बिता दिये।।3।।

बहु जन्म संचित पुण्य से, दुर्लभ मनुज योनी मिली।
तब बालपन में जड़ सदृश, सज्ज्ञान कलिका ना खिली।।
बहुपुण्य के संयोग से, प्रभु आपका दर्शन मिला।
बहिरातमा औ अंतरात्मा, का स्वयं परिचय मिला।।4।।
तुम सकल परमात्मा बने, जब घातिया आहत हुए।
उत्तम अतीन्द्रिय सौख्य पा, प्रत्यक्ष ज्ञानी तब हुए।।
फिर शेष कर्म विनाश करके, निकल परमात्मा बने।
कल-देहवर्जित निकल अकल, स्वरूप शुद्धात्मा बने।।5।।
हे नाथ! बहिरात्मा दशा को, छोड़ अंतर आतमा।
होकर सतत ध्याऊँ तुम्हें, हो जाऊँ मैं परमात्मा।।
संसार का संसरण तज, त्रिभुवन शिखर पे जा बसूँ।
निज के अनंतानंत गुणमणि, पाय निज में ही बसूँ।।6।।
जय वासुपूज्य जिनेंद्र, मल्लीनाथ जय नेमिप्रभो।
जय पार्श्वनाथ जिनेंद्र सन्मतिनाथ सन्मति दो प्रभो!।।
मैं भक्ति से वंदन करूँ, प्रणमन करूँ शत शत नमूं।।
निज ज्ञानमति कैवल्य हो इस हेतु ही नितप्रति नमूं।।7।।

–दोहा–

पंचबालयति तीर्थंकर, पूजूं भक्ति समेत।
स्वात्म सौख्य संपति मिले, गुण अनंत समवेत।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य–मल्लिनाथ–पार्श्वनाथ–महावीरस्वामिपंचबालयति-तीर्थंकरेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो पांच बालयति का विधान, श्रद्धा भक्ती से करते हैं।
वे त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, पाकर स्वात्मा में रमते हैं।।
देवर्षिदेव लौकांतिकसुर, होकर अंतिम भव लभते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति भास्कर हो, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. २

श्रीवासुपूज्य जिनपूजा

अथ स्थापना –गीता छंद

श्रीवासुपूज्य जिनेन्द्र वासव-गणों से पूजित सदा।
इक्ष्वाकुवंश दिनेश काश्यप-गोत्र पुंगव शर्मदा।।
सप्तर्द्धिभूषित गणधरों से, पूज्य त्रिभुवन वंद्य हैं।
आह्वान कर पूजूँ यहाँ, मिट जाएगा भव फंद है।।1।।

–गीता छंद–

वासुपूज्य तीर्थेश प्रभु, बालयती जगवंद्य।
नमूं नमूं नित भक्ति से, पाऊं परमानंद।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयति वासुपूज्यतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीबालयति वासुपूज्यतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीबालयति वासुपूज्यतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अथ अष्टक –गीता छंद

हे नाथ! जग में जन्म व्याधी, बहुत ही दुख दे रही।
अब मेट दीजे इसलिए, त्रयधार दे पूजूँ यहीं।।
श्री वासुपूज्य जिनेंद्र द्वादश, तीर्थकर्ता सिद्ध हैं।
सौ इन्द्र वंदित पद कमल, संपूर्ण सिद्धि निमित्त हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! इस यमराज का, संताप अब नहिं सहन है।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, चर्चूं सुगंधित गंध है।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे ज्ञान के, बहु खंड-खंड हुए यहाँ।
कर दो अखंडित ज्ञान तंदुल, पुंज से पूजूँ यहाँ।।श्री.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! भवशर विश्वजेता, आप ही इसके जयी।
इस हेतु तुम पादाब्ज में, बहु पुष्प अर्पूं मैं यहीं।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! त्रिभुवन अन्न खाया, भूख अब तक ना मिटी।
प्रभु भूख व्याधी मेट दो, इस हेतु चरु अर्पूं अभी।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिरत्न दीपक से कभी, मन का अंधेरा ना भगा।
हे नाथ! तुम आरति करत ही, ज्ञान का सूरज उगा।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! मेरे कर्म कैसे, भस्म हों यह युक्ति दो।
मैं धूप खेऊँ अग्नि में, ये कर्म वैरी भस्म हों।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! चाहा बहुत फल, बहुते चरण में नत हुआ।
नहिं तृप्ति पायी इसलिए, फल सरस तुम अर्पण किया।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नाथ! निज के रत्नत्रय, अनमोल श्रेष्ठ अनर्घ हैं।
मुझको दिलावो ''ज्ञानमति'', इस हेतु अर्घ्य समर्प्य है।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यबालयतितीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

वासुपूज्य चरणाब्ज, शांतीधारा मैं करूँ।
मिले निजातम स्वाद, तिहुँजग में भी शांति हो।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित हरसिंगार, जिनपद पुष्पांजलि करूँ।
भरें सौख्य भंडार, रोग शोक संकट टलें।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अथ पंचकल्याणक अर्घ्य)

–गीताछंद–

दिव महाशुक्र विमान से, च्युत हो प्रभू चंपापुरी।
वसुपूज्य पितु माता जयावति, गर्भ आये शुभ घरी।।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी, सुरवृंद माँ पितु को जजें।
हम गर्भकल्याणक जजत, संपूर्ण दुःखों से छुटें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाषष्ठ्यां श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, सुरगृह स्वयं बाजे बजे।
जन्में जिनेश्वर उसी क्षण, सुरपति मुकुट भी थे झुके।।
माँ के प्रसूती सद्म जा, शचि ने शिशू को ले लिया।
सुर शैल पर अभिषव हुआ, पूजत जगत भव कम किया।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश तिथी, वैराग्य मन में आ गया।
सुर पालकी पे प्रभु चढ़े, लौकांतिसुर स्तुति किया।।
इन्द्राणि निर्मित चौक पर, तिष्ठे स्वयं दीक्षा लिया।
प्रभु तपकल्याणक पूजते, मिल जाय जिन दीक्षाप्रिया।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वन मनोहर में तरु कदंबक, तले प्रभु थे ध्यान में।
शुभ माघ शुक्ला द्वितीया, प्रभु केवली भास्कर बनें।।
धनदेव निर्मित समवसृति में, गंधकुटि में शोभते।
द्वादशसभा में भव्य नमते, हम प्रभू को पूजते।।4।।

ॐ ह्रीं माघशुक्लाद्वितीयायां श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकरज्ञानकल्याण-काय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश तिथी, चंपापुरी से नाथ ने।
संपूर्ण कर्म विनाश कर, शिववल्लभा के पति बने।।
सौधर्म इन्द्र सुरादिगण, हर्षित हुए वंदन करें।
हम वासुपूज्य जिनेन्द्र की, निर्वाण पूजा को करें।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपदशुक्लाचतुर्दश्यां श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकरमोक्षकल्याण-काय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य (दोहा) -

वासुपूज्य त्रिभुवन नमित, इन्द्रगणों से वंद्य।
पूजूँ अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊँ सौख्य अमंद।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रथम वलय में अथ 108 अर्घ्य

-दोहा-

वासुपूज्य भगवान के, गुणमणि नंतानंत।
अष्टोत्तर शत गुण जजूँ, पुष्पांजलि विकिरंत।।

अथ मंडलस्योपरि प्रथमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

सिद्धिरमा के पति प्रभो! आप नाम 'श्रीमान'।
केवलज्ञान विभव जजूं वासुपूज्य भगवान।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीमते श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवच बिन प्रतिबुद्ध हों, अतः'स्वयंभू' सिद्ध।
वासुपूज्य भगवान को, पूजूँ बनूँ समृद्ध।।2।।

ॐ ह्रीं स्वयंभुवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमादि धर्म से, शोभित होकर सिद्ध।
'वृषभ' नाम युत आपको, जजत मिले सब सिद्धि।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शंभव' सुखदाता तुम्हीं, श्रेष्ठ जन्म ले नाथ।
जजूँ तीर्थंकर आपको, नमूँ नमाकर माथ।।4।।

ॐ ह्रीं शंभवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शंभू परमानंद सुख, अनुभव करो हमेश।
स्वात्मसुखामृत हेतु मैं, जजूँ वासुपूज्येश।।5।।

ॐ ह्रीं शंभवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा चिन्मय शुद्ध बुध, उससे प्रगटे आप।
अतः 'आत्मभू' तीर्थंकर, जजत बनूँ निष्पाप।।6।।

ॐ ह्रीं आत्मभुवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वयं शोभते गुण सहित, आप 'स्वयंप्रभ' नाथ।
निजगुण प्रगटन हेतु मैं, जजूँ करूँ भव सार्थ।।7।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी आप 'प्रभु', मम दुख हरण समर्थ।
जजूँ सर्वसुख हेतु मैं वासुपूज्य अन्वर्थ।।8।।

ॐ ह्रीं प्रभवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भोगे परमानंदसुख, 'भोक्ता' नाथ महंत।
भव में दुख भोगे बहुत, जजत मिले भव अन्त।।9।।

ॐ ह्रीं भोक्त्रे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुचक्षु से, त्रिभुवन में हो व्याप्त।
अतः 'विश्वभू' आप हैं, नमूँ तीर्थकृन्नाथ।।10।।

ॐ ह्रीं विश्वभुवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनः न भव को धारते, हे 'अपुनर्भव' सिद्ध।
पुनर्जन्म के नाशने, जजूँ आपको नित्त।।11।।

ॐ ह्रीं अपुनर्भवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व आत्मा निज सदृश, लख 'विश्वात्मा' आप।
पूर्णज्ञान तीर्थेश को, जजत मिटे संताप।।12।।

ॐ ह्रीं विश्वात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के जीव के, स्वामी आप जिनेश।
मेरी भी रक्षा करो, जजूँ 'विश्व लोकेश'।।13।।

ॐ ह्रीं विश्वलोकेशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी तरफ में चक्षु हैं, केवलदर्शनरूप।
नमूँ 'विश्वतश्चक्षु' को, पाऊँ स्वात्मस्वरूप।।14।।

ॐ ह्रीं विश्वतश्चक्षुषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी क्षरण या क्षय नहीं, जग में आप प्रधान।
'अक्षर' तीर्थंकर तुम्हें, जजत मिले निजथान।।15।।

ॐ ह्रीं अक्षराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल जगत को जानते, अतः 'विश्ववित्' नाथ।
सकल ज्ञान मेरा करो, सदा नमाऊँ माथ।।16।।

ॐ ह्रीं विश्वविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विमल कैवल्य के, स्वामी नमूँ हमेश।
सब विद्यापति के पती, आप 'विश्वविद्येश'।।17।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्येशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ को जानकर, सबको दें उपदेश।
'विश्वयोनि' को नित जजूँ, मिटे सकल भव क्लेश।।18।।

ॐ ह्रीं विश्वयोनये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वरूप को नाश नहिं, अविनाशी प्रभु नित्य।
अतः 'अनश्वर' तीर्थकर, जजत लहूँ सुख नित्य।।19।।

ॐ ह्रीं अनश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग को देखा अतः, सकलदर्शि हो आप।
नाम 'विश्वदृश्वा' प्रभो, जजत मिटे भव ताप।।20।।

ॐ ह्रीं विश्वदृश्वने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान प्रकाश से, व्याप्त किया सब विश्व।
नाम मंत्र 'विभु' आपका, जजत दिखे सब विश्व।।21।।

ॐ ह्रीं विभवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँगति भ्रमते जीव को, पहुँचाते शिवमाहिं।
'धाता' परम दयालु हो, पूजत दुःख नशाहिं।।22।।

ॐ ह्रीं धात्रे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के ईश तुम, कर्मदूर 'विश्वेश'।
रत्नत्रय निधि हेतु मैं, वंदूँ भक्ति हमेश।।23।।

ॐ ह्रीं विश्वेशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित उपदेशक जीव के, नेत्र समान महान्।
अतः 'विश्वलोचन' जजूं, वासुपूज्य सुखखान।।24।।

ॐ ह्रीं विश्वलोचनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अलोक समस्त को, ज्ञानज्योति से व्याप।
अतः 'विश्वव्यापी' प्रभो, जजत मिटे भव ताप।।25।।

ॐ ह्रीं विश्वव्यापिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मविधी कहते 'विधू' कर्ममर्महर नाथ।
ज्ञानकिरण से मोहतम, हरो जजूँ यह स्वार्थ।।26।।

ॐ ह्रीं विधवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज सृष्टी को निर्मिता, 'वेधा' जगविख्यात।
धर्मसृष्टि सर्जन किया, नमत मिटे भव आर्त।।27।

ॐ ह्रीं वेधसे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शाश्वत' कभी न नष्ट हों, वासुपूज्य अमलान।
निज पद शाश्वत दीजिये, जजूँ सदा धर ध्यान।।28।।

ॐ ह्रीं शाश्वताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवसरण में चहुँदिशी, मुख दीखे प्रभु आप।
अतः 'विश्वतोमुख' तुम्हीं, नमत हरूँ संताप।।29।।

ॐ ह्रीं विश्वतोमुखाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मभूमि में नित्य ही, उपदेशा षट्कर्म।
अतः 'विश्वकर्मा' तुम्हीं, जजत मिले निजशर्म[1]।।30।।

ॐ ह्रीं विश्वकर्मणे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सबमें ज्येष्ठ तुम, 'जगज्येष्ठ' भगवान।
जजूँ भक्ति से नित्य मैं, करो मुझे अमलान।।31।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्येष्ठाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आपके ज्ञान में, सब पदार्थ झलकंत।
'विश्वमूर्ति' तुमको जजत, निज गुणमणि विलसंत।।32।।

ॐ ह्रीं विश्वमूर्तये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को जीतते, सद्दृष्टी मुनि आदि।
उनके ईश्वर को नमूँ, प्रभो! 'जिनेश्वर' नादि।।33।।

ॐ ह्रीं जिनेश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जगत इक समय में, अवलोकें प्रभु आप।
नमूँ 'विश्वदृक्' को सतत, समकित हो निष्पाप।।34।।

ॐ ह्रीं विश्वदृशे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब प्राणी के ईश तुम, अतः 'विश्वभूतेश'।
नमत ज्ञान कलिका खिले, मिलता सौख्य अशेष।।35।।

ॐ ह्रीं विश्वभूतेशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल विश्व को तेज से, व्याप्त किया भगवान।
'विश्वज्योति' को नित नमूँ, नशें कर्म बलवान।।36।।

ॐ ह्रीं विश्वज्योतिषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम से बढ़कर नहिं कोई, जग में ईश्वर होय।
नमूँ 'अनीश्वर' को सतत, कर्मकालिमा धोय।।37।।

ॐ ह्रीं अनीश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. सुख।

क्रोधादिक अरि जीत के, हुये आप 'जिन' सिद्ध।
ज्ञानादिक आनन्त्य गुण, जजत लहूं नव निद्ध।।38।।

ॐ ह्रीं जिनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अति उत्कृष्ट स्वभाव से, जो नित ही जयशील।
'जिष्णु' सकल परमात्मा, नमत बनूँ जयशील।।39।।

ॐ ह्रीं जिष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत गुण आपके, माप सके ना कोय।
नाथ अमेयात्मा अतः, नमत सिद्धपद होय।।40।।

ॐ ह्रीं अमेयात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पृथ्वी के ईश्वर तुम्हीं, 'विश्वरीश' शुभ नाम।
निजगुण संपद हेतु मैं, पूजूँ करूँ प्रणाम।।41।।

ॐ ह्रीं विश्वरीशाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जगत के जीव के, रक्षक हो भगवंत।
नमूँ 'जगत्पति' आपको, जजत करूँ भव अंत।।42।।

ॐ ह्रीं जगत्पतये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस अनंत संसार को, जीता धर ध्यानास्त्र।
प्रभु 'अनंतजित्' हो गये, जजत मिले धर्मास्त्र।।43।।

ॐ ह्रीं अनंतजिते श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन वच के गोचर नहीं, आत्मस्वरूप अचिन्त्य।
प्रभो 'अचिन्त्यात्मा' तुम्हीं, पूजत सौख्य अनिंद्य।।44।।

ॐ ह्रीं अचिन्त्यात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों का उपकार कर, 'भव्यबंधु' हो आप।
रत्नत्रय संपत् भरो, जजूँ करो निष्पाप।।45।।

ॐ ह्रीं भव्यबन्धवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह आवरण द्वय तथा, अन्तराय को घात।
नाथ 'अबन्धन' हो गये, नमत मिले सुख सात।।46।।

ॐ ह्रीं अबन्धनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतयुग के आरंभ में, हुये तीर्थकर देव।
जजत 'युगादीपुरुष' को, मिले स्वपद स्वयमेव।।47।।
ॐ ह्रीं युगादिपुरुषाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञानादिक अतुल, गुणगण वृद्धि करंत।
'ब्रह्मा' हो प्रभु आप ही, जजत बने गुणवंत।।48।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मणे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच ज्ञानमय आप हैं, पंच परमगुरु आप।
'पंचब्रह्ममय' आपको, नमत मिटे भवताप।।49।।
ॐ ह्रीं पंचब्रह्ममयाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष रूप आनंदमय, 'शिव' कहलाये नाथ।
ज्ञानानंद मिले मुझे, जजत करूँ भव घात।।50।।
ॐ ह्रीं शिवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सखी छंद–

भविजन का पालन करते, सब गुण को पूरण करते।
'पर' नाम मंत्र पूजूँ मैं, पर पुद्गल से छूटूँ मैं।।51।।
ॐ ह्रीं पराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परतर' हो तीर्थंकर हो, जग में उत्कृष्ट तुम्हीं हो।
तुम नाम मंत्र पूजन से, जिन में समरससुख प्रगटे।।52।।
ॐ ह्रीं परतराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय से गम्य न तुम हो, प्रभु 'सूक्ष्म' नामधर तुम हो।
तुम नाम मंत्र मैं पूजूँ, सब जन्म मरण से छूटूँ।।53।।
ॐ ह्रीं सूक्ष्माय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुस्थित हो परम सुपद में, 'परमेष्ठी' नाम जगत में।
तुम नाम मंत्र की अर्चा, जिनगुण की संपति भर्ता।।54।।
ॐ ह्रीं परमेष्ठिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सदा एक से रहते, इसलिये 'सनातन' कहते।
मन वच तन से मैं वंदूँ, यमराज दुःख को खंडूँ।।55।।
ॐ ह्रीं सनातनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'स्वयंज्योति' हो जग में, आत्मा रवि सम चमके है।
एकाग्रमना पूजूँ मैं, सब दुःखों से छूटूं मैं।।56।।
ॐ ह्रीं स्वयंज्योतिषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अज' हो उत्पन्न कभी ना, प्रभु तुम मृत्यू से हीना।
मैं पूजूँ श्रद्धा धरके, मुझ में रत्नत्रय प्रगटे।।57।।
ॐ ह्रीं अजाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं गर्भवास है प्रभु को, अतएव 'अजन्मा' तुम हो।
मैं पूजूँ भक्ति सहित हो, परमानंदामृत भर दो।।58।।
ॐ ह्रीं अजन्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादश अंगों की रचना, तुम से ही है उत्पन्ना।
हो 'ब्रह्मयोनि' भगवंता, पूजत होऊँ सुखवंता।।59।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मयोनये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योनी हैं लाख चुरासी, उनमें उत्पत्ति न होती।
इसलिये 'अयोनिज' भगवन्! पूजूँ नहिं घूमूँ भववन।।60।।
ॐ ह्रीं अयोनिजाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह अरी को जीते, 'मोहारि विजयि'[1] हो नीके।
मैं अशुभ कर्म को नाशूं, निज में सज्ज्ञान प्रकाशूँ।।61।।
ॐ ह्रीं मोहारिविजयिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वोत्कर्ष से जयते, 'जेता' इससे मुनि कहते।
मैं पूजूँ तुम्हें रुची से, आत्मा में जयश्री प्रगटे।।62।।
ॐ ह्रीं जेत्रे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब श्रीविहार प्रभु का हो, वृषचक्र अग्र चलता हो।
अतएव 'धर्मचक्री' हो, जजते निजवृषचक्री हो।।63।।
ॐ ह्रीं धर्मचक्रिणे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु दया ध्वजा अतिशायी, तुम नाम मंत्र सुखदायी।
अतएव 'दयाध्वज' पूजूँ, हो दया तभी मैं छूटूँ।।64।।
ॐ ह्रीं दयाध्वजाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1.टीका में 'मोहारिः' और 'विजयी' ऐसे दो पद लिखे हैं। आगे 'सिद्धसिद्धान्तवित्' एक किया है।

सब शांत हुये कर्मारी, पूजत हो सुख अविकारी।
अतएव 'प्रशांतारी' को, मैं नमूँ दुःखहारी को।।65।।
ॐ ह्रीं प्रशांतारये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु हो अनंत ज्ञानात्मा, नहिं अंत कभी हो आत्मा।
अतएव 'अनन्तात्मा' हो, पूजत मम शुद्धात्मा हो।।66।।
ॐ ह्रीं अनन्तात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्लध्यान को धरके, 'योगी' हो जग में चमके।
मुझमें समतारस छलके, मैं पूजूँ बहुरुचि धरके।।67।।
ॐ ह्रीं योगिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणधर देवादि मुनीशा, उनसे अर्चित जगदीशा।
हे 'योगिश्वरार्चित' नाथा, मैं नमूँ नमाऊँ माथा।।68।।
ॐ ह्रीं योगीश्वरार्चिताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ब्रह्मा-आत्मा को जाने, अतएव 'ब्रह्मविद्' मानें।
निज आत्मज्ञान के हेतू, तुम भक्ती भवदधि सेतू।।69।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ब्रह्म मर्म को जानें, करूणा का मर्म पिछानें।
'ब्रह्मातत्त्वज्ञ' बखाने, मैं नमूँ मोहतम हानें।।70।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मतत्त्वज्ञाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान स्वविद्या, जाने अनंतगुण विद्या।
'ब्रह्मोद्यावित्' वे स्वामी, मैं नमूँ बनूँ शिवगामी।।71।
ॐ ह्रीं ब्रह्मोद्याविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवहेतू यत्न करें जो, यतिवर उनके ईश्वर जो।
मैं नमूँ 'यतीश्वर' आत्मा, पूजत प्रगटे अंतरात्मा।।72।।
ॐ ह्रीं यतीश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कर्म कलंक विदूरा, अतएव 'शुद्ध' गुणपूरा।
मैं पूजूँ भक्ति बढ़ाके, हर्षूं निज के गुण पाके।।73।।
ॐ ह्रीं शुद्धाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो केवलज्ञान स्वरूपी, बुद्धी से 'बुद्ध' बने जी।
मुझमें ज्ञानामृत भरिये, मैं पूजूँ भव दुःख हरिये।।74।।
ॐ ह्रीं बुद्धाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो शुद्ध ज्ञान से चमके, अतएव 'प्रबुद्धात्मा' हैं।
निज पर का ज्ञान प्रगट हो, अतएव नमूँ प्रमुदित हो।।75।।
ॐ ह्रीं प्रबुद्धात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कारज सिद्ध तुम्हारे, पूर्ती कर मुक्ति पधारे।
'सिद्धार्थ' ख्यात हैं जग में, पूजत ही सुख हो निज में।।76।।
ॐ ह्रीं सिद्धार्थाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शासन सिद्ध कहा है, वह दया धर्म की जड़ है।
मैं नमूँ 'सिद्धशासन' को, करुं आत्मा पर शासन जो।।77।।
ॐ ह्रीं सिद्धशासनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृतकृत्य हुये भगवंता, लोकाग्र विराजें जो जा।
उन 'सिद्ध'[1] प्रभू को पूजूँ, संपूर्ण कर्म से छूटूँ।।78।।
ॐ ह्रीं सिद्धाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो द्वादशांग सिद्धांता, वह कहा अनादि अनन्ता।
'सिद्धांतसुवित्'[2] कहलाये, हम भक्ती से गुण गायें।।79।।
ॐ ह्रीं सिद्धान्तविदे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनियों ने नित आराध्या, अगणित गुणमणि को साध्या।
तुम 'ध्येय' ध्यान के योग्या, पूजत होते आरोग्या।।80।।
ॐ ह्रीं ध्येयाय श्री वासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सिद्ध-देवगण माने, उनके आराध्य बखाने।
हो 'सिद्धसाध्य' तीर्थंकर, पूजत प्रगटे परमेश्वर।।81।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाध्याय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---
1. सहस्रनाम टीका पुस्तक में 'सिद्ध' पाठ है। 2. सहस्रनाम टीका में 'सिद्धसिद्धांतवित्।

हो सब जग के हितकारी, सुखकारी सब अघहारी।
अतएव 'जगद्धित' स्वामी, पूजत होऊँ शिवगामी।।82।।
ॐ ह्रीं जगद्धिताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गुण क्षमा आप में शोभे, शिवतिय का भी मन लोभें।
अतएव 'सहिष्णु' तुम्हीं हो, मेरे में यह गुण भर दो।।83।।
ॐ ह्रीं सहिष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहिं निज स्वरूप से च्युत हो, अतएव आप अच्युत हो।
परमात्मनिष्ठ पद पाऊँ, इसलिये आपको ध्याऊँ।।84।।
ॐ ह्रीं अच्युताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहिं होता अन्त कभी भी, अतएव 'अनंत' तुम्हीं ही।
हे वासुपूज्य तीर्थंकर, दर्पणवत् झलके सब जग।।85।।
ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'प्रभविष्णु' समर्थ तुम्हीं हो, शक्ती अनंतयुत ही हो।
मैं भी समर्थ हो जाऊँ, निज गुण पंकज विकसाऊँ।।86।।
ॐ ह्रीं प्रभविष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्कृष्ट जन्मधर स्वामी, भवपंच विनाशी नामी।
इसलिये 'भवोद्भव' ध्याऊँ, नहिं अन्य शरण अब जाऊँ।।87।।
ॐ ह्रीं भवोद्भवाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभु आप 'प्रभूष्णु' कहाये, गणधर मुनिगण गुण गायें।
शक्तीशाली तुम पूजा, इस सम नहिं सुकृत दूजा।।88।।
ॐ ह्रीं प्रभूष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हो गई जरा भी जीर्णा, अतएव 'अजर' गुणपूर्णा।
है अजर अमर निज आत्मा, पूजत पाऊँ शुद्धात्मा।।89।।
ॐ ह्रीं अजराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहिं पूजा शक्य तुम्हारी, इससे 'अयज्य'[1] गुणधारी।
मैं ग्रहण करूँ निज आत्मा, ध्याऊँ वंदूँ शुद्धात्मा।।90।।
ॐ ह्रीं अयज्याय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अजर्यः पाठ है।

रवि शशि करोड़ की आभा, उनसे भी अधिक गुणाभा।
'भ्राजिष्णु' आप भगवंता, पूजत हो सौख्य अनंता।।91।।
ॐ ह्रीं भ्राजिष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
केवल बुद्धी के स्वामी, 'धीश्वर' हो अंतर्यामी।
मैं केवलज्ञान उपाऊँ, अतएव प्रभो! गुण गाऊँ।।92।।
ॐ ह्रीं धीश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नहिं नाश कभी भी होता, 'अव्यय' गुण भव दुख धोता।
व्ययरहित हमारी आत्मा, चिंतामणि शुद्ध चिदात्मा।।93।।
ॐ ह्रीं अव्ययाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्मेंधन दहन किया है, स्व 'विभावसु' नाम लिया है।
या शशि अमृत बरसाते, पूजत ही कर्म जलाते।।94।।
ॐ ह्रीं विभावसवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जग में नहिं जन्म धरें जो, श्री 'असंभूष्णु' प्रभु हैं वो।
पूजत ही साम्य बसेरा, नहिं पुनर्जन्म हो मेरा ।।95।।
ॐ ह्रीं असंभूष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वयमेव सिद्ध बन प्रगटे, मुनि 'स्वयंभूष्णु' हैं कहते।
मैं स्वयं स्वयंपद पाऊँ, भव भव के दुःख नशाऊँ।।96।।
ॐ ह्रीं स्वयंभूष्णवे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तीर्थंकर होकर जन्मे, अतएव 'पुरातन' सच में।
मैं वंदूं निज सुख हेतू, पाऊँ भवदधि का सेतू।।97।।
ॐ ह्रीं पुरातनाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्कृष्ट केवली ज्ञानी, परमात्मा अंतर्यामी।
वंदूं धर मन अभिलाषा, पूरी हो शिवपद आशा।।98।।
ॐ ह्रीं परमात्मने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्कृष्ट नेत्र त्रिभुवन में, हो 'परंज्योति' मुनिगण में।
मैं आत्मज्योति के हेतू, पूजूँ तुम हो भवसेतू।।99।।
ॐ ह्रीं परंज्योतिषे श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमेश्वर तीनों जग के, 'त्रिजगत्परमेश्वर' कहते।
मैं नमूं नमूं तुम पद में, रत्नत्रय प्रगटे निज में।।100।।

ॐ ह्रीं त्रिजगत्परमेश्वराय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

'महामुनी' प्रभु आप, बालब्रह्मचारी प्रथम।
वासुपूज्य भगवान! पूजत ही सुखसंपदा।।101।।

ॐ ह्रीं महामुनये श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनि हो मौन धरंत, प्रभू 'महामौनी' तुम्हीं।
वासुपूज्य प्रभु पूज्य, रोग शोक संकट टले।।102।।

ॐ ह्रीं महामौनिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म शुक्लद्वय ध्यान, धार 'महाध्यानी'[1] हुये।
वासुपूज्य तुम वंद्य, करते ही सब सुख मिले।।103।।

ॐ ह्रीं महाध्यानिने श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण जितेन्द्रिय आप, नाम 'महादम' धारते।
वासुपूज्य भगवान, पूजत आतम निधि मिले।।104।।

ॐ ह्रीं महादमाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ क्षमा के ईश, नाम 'महाक्षम' सुर कहें।
वासुपूज्य भगवान, पूजूं मैं अतिभाव से।।105।।

ॐ ह्रीं महाक्षमाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह सहस सुशील, 'महाशील' तुम नाम है।
वासुपूज्य गुणशील, नाममंत्र मैं पूजहूँ।।106।।

ॐ ह्रीं महाशीलाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप अग्नी में आप, कर्मेंधन को होमिया[1]।
'महायज्ञ' तुम नाथ, पूजूँ भक्ति बढ़ाय के।।107।।

ॐ ह्रीं महायज्ञाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. होम कर दिया।

अतिशय पूज्य जिनेश! नाम 'महामख' धारते।
वासुपूज्य भगवान, पूजत ही सब सुख मिले।।108।।

ॐ ह्रीं महामखाय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य –

अष्टोत्तर शत गुण धनी, वासुपूज्य भगवान।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, जजूं करूं गुणवान।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीवासुपूज्यतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा–

घाति चतुष्टय घात कर, प्रभु तुम हुये कृतार्थ।
नव केवल लब्धी रमा, रमणी किया सनाथ।।1।।

–शेरछंद–

प्रभु दर्शमोहनीय को निर्मूल किया है।
सम्यक्त्व क्षायिकाख्य को परिपूर्ण किया है।।
चारित्र मोहनीय का विनाश जब किया।
क्षायिक चरित्र नाम यथाख्यात को लिया।।2।।

संपूर्ण ज्ञानावर्ण का जब आप क्षय किया।
कैवल्य ज्ञान से त्रिलोक जान सब लिया।।
प्रभु दर्शनावरण के क्षय से दर्श अनंता।
सब लोक औ अलोक देखते हो तुरंता।।3।।

दानांतराय नाश के अनंत प्राणि को।
देते अभय उपदेश तुम शिवपथ का दान जो।।

लाभान्तराय का समस्त नाश जब किया।
क्षायिक अनंतलाभ का तब लाभ प्रभु लिया।।4।।

जिससे परमशुभ सूक्ष्म दिव्य नंत वर्गणा।
पुद्गलमयी प्रत्येक समय पावते घना।।
जिससे न कवलाहार हो फिर भी तनू रहे।
शिवप्राप्त होने तक शरीर भी टिका रहे।।5।।

भोगांतराय नाश के अतिशय सुभोग हैं।
सुरपुष्पवृष्टि गंध उदकवृष्टि शोभ हैं।।
पग के तले वरपद्म रचें देवगण सदा।
सौगंध्य शीतपवन आदि सौख्य शर्मदा।।6।।

उपभोग अन्तराय का क्षय हो गया जभी।
प्रभु सातिशय उपभोग को भी पा लिया तभी।।
सिंहासनादि छत्र चंवर तरु अशोक हैं।
सुर दुंदुभी भाचक्र दिव्यध्वनि मनोज्ञ हैं।।7।।

वीर्यान्तराय नाश से आनन्त्य वीर्य है।
होते न कभी श्रांत आप धीर वीर हैं।।
प्रभु चार घाति नाश के नव लब्धि पा लिया।
आनन्त्य ज्ञान आदि चतुष्टय प्रमुख किया।।8।।

श्रीधर्म आदि छ्यासठ गणधर गुरू रहें।
मुनिराज बाहत्तर हजार ध्यानरत कहें।।
इक लाख छह हजार 'सेना' आदि आर्यिका।
दो लाख कहें श्रावक चउ लाख श्राविका।।9।।

सत्तर धनुष उत्तुंग देह महिष चिह्न है।
आयू बहत्तर लाख वर्ष लाल वर्ण है।।
फिर भी तो निराकार वर्ण आदि शून्य हो।
आनन्त्य काल तक तो सिद्धक्षेत्र में रहो।।10।।

प्रभु आप सर्व शक्तिमान कीर्ति को सुना।
इस हेतु से ही आज यहाँ मैं दिया धरना।।
अब तारिये न तारिये यह आपकी मरजी।
बस ''ज्ञानमती'' पूरिये यदि मानिये अरजी।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिवासुपूज्यतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो पांच बालयति का विधान, श्रद्धा भक्ती से करते हैं।
वे त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, पाकर स्वात्मा में रमते हैं।।
देवर्षिदेव लौकांतिकसुर, होकर अंतिम भव लभते हैं।
कैवल्य ''ज्ञानमति'' भास्कर हो, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ३
श्री मल्लिनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना-नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर श्रीमल्लिनाथ ने, निज पद प्राप्त किया है।
काम मोह यम मल्ल जीतकर, सार्थक नाम किया है।।
कर्म मल्ल विजिगीषु[1] मुनीश्वर, प्रभु को मन में ध्याते।
हम पूजें आह्वानन करके, सब दुःख दोष नशाते।।1।।

–दोहा–

मल्लिनाथ प्रभु बालयति, नमूं नमूं त्रयकाल।
पूजूं श्रद्धा भाव से, पुनः नमूं नत भाल।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –गीता छंद –

जल अमल ले जिनपाद पूजूँ, कर्म मल धुल जायेगा।
आत्मीक समतारस विमल, आनंद अनुभव आयेगा।।
श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र के, चरणाब्ज का अर्चन करूँ।
यमराज मल्ल पछाड़ने को, कोटिशः वंदन करूँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुगंधित ले जिनेश्वर, पद जजूँ आनंद से।
स्वात्मानुभव आह्लाद पाकर, पूजहूँ जगद्वंद से।।श्री.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. जीतने के इच्छुक।

चंदा किरण सम धवल तंदुल, पुंज जिन आगे धरूँ।
वर धर्मशुक्ल सुध्यान निर्मल, पाय आतम निधि भरूँ।।
श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र के, चरणाब्ज का अर्चन करूँ।
यमराज मल्ल पछाड़ने को, कोटिशः वंदन करूँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदार चंपक पुष्प सुरभित, लाय जिनपद पूजते।
निज आत्मगुण कलिका खिले, जन भ्रमर तापे गूंजते।।श्री.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक पुआ बरफी इमरती, लाय जिन सन्मुख धरें।
आत्मैकरस पीयूष मिश्रित, अतुल आनंद भव हरें।।श्री.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक शिखा उद्योतकारी, जिनचरण में वारना।
अज्ञान तिमिर हटाय अंतर, ज्ञान ज्योती धारना।।श्री.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप मंगाय स्वाहा[1], नाथ को अर्पण किया।
वसुकर्म[2] स्वाहा हेतु ही, निज आत्म को तर्पण किया।।श्री.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम अनार गन्ना, लाय जिनपूजा करूँ।
वर मोक्षफल की आश लेकर, कर्मकंटक परिहरूँ।।श्री.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

1. अग्नि। 2. आठ।

जल गंध अक्षत पुष्प नेवज, दीप धूप फलादि ले।
जिन कल्पतरु पूजत मुझे, कैवल्य सुज्ञानमती मिले।।श्री.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

कंचनझारी में भरा, यमुना सरिता नीर।
जिनपद में धारा करत, मिले भवोदधि तीर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरभित फूलों को चुना, बेला जुही गुलाब।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिले निजातम लाभ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

(अथ पंचकल्याणक अर्घ्य)

–नरेन्द्र छंद–

मिथिलापुरी में कुंभ नृपति गृह, प्रजावती रानी को।
सोलह स्वप्न दिखा प्रभु आये, गर्भ बसे अतिसुख सों।।
चैत्र सुदी एकम तिथि उत्तम, सुरपति उत्सव कीना।
हम पूजें प्रभु गर्भकल्याणक, भव भव दुःख क्षय कीना।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लाप्रतिपदायां श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस प्रभु जन्में, त्रिभुवन धन्य हुआ था।
रुचकाचल देवियाँ आय के, जातक कर्म किया था।।
सुरगिरि पर जन्माभिषेक कर, सुरगण धन्य हुये तब।
जन्मकल्याणक जजते मेरे, संकट दूर हुये सब।।2।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकरजन्म-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१. अग्नि । २. आठ।

जातिस्मरण हुआ प्रभु को जब, बाल ब्रह्मचारी ही।
देव जयंता पालकि लाये, मगसिर सुदि ग्यारस थी।।
श्वेतबाग में पहुँच प्रभू ने, दीक्षा स्वयं लिया था।
तपकल्याणक पूजा करके, सुरगण पुण्य लिया था।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्लाएकादश्यां श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकरदीक्षा-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदी दुतिया वन में प्रभु, तरु अशोक तल तिष्ठे।
मोह नाश दशवें गुणथाने, बारहवें में पहुँचे।।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी, अंतराय को नाशा।
केवलज्ञान सूर्य किरणों से, लोकालोक प्रकाशा।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाद्वितीयायां श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन सुदि पंचमि तिथि उत्तम, गिरि सम्मेद पर तिष्ठे।
चार अघाती कर्मनाश कर, मोक्षधाम में पहुँचे।।
इन्द्रगणों ने उत्सव करके, तांडवनृत्य किया तब।
शिवकल्याणक पूजा करते, जीवन सफल हुआ अब।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लापंचम्यां श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकरमोक्ष–कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–दोहा–

मल्लिनाथ की भक्ति से, मृत्युमल्ल का अन्त।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजते, भक्त बने भगवन्त।।6।।

ॐ ह्रीं बालयतिश्रीमल्लिनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलि।

द्वितीय वलय में अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

मल्लिनाथ भगवंत को, जजत मिले शिवपंथ।
बालब्रह्मचारी नमूं, पुष्पांजलि विकिरंत।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि द्वितीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

–सोरठा–

दिव्यध्वनी के नाथ, अठरह महभाषा कहीं।
लघू सात सौ भाष, मैं पूजूँ वसु अर्घ्य ले।।1।।

ॐ ह्रीं दिव्यभाषापतये श्रीमल्लिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सुंदर आप, अतः 'दिव्य' गणधर कहे।
नशें कर्म अभिशाप, पूजत हो जिनसंपदा।।2।।

ॐ ह्रीं दिव्याय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय पावन वाच, 'पूतवाक्' प्रभु आप हैं।
नमत मिले गुण सांच, मल्लिनाथ तीर्थेश को।।3।।

ॐ ह्रीं पूतवाचे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शासन परम पवित्र, मल्लिनाथ का लोक में।
कर्माराति लवित्र, पूजत आत्म पवित्र हो।।4।।

ॐ ह्रीं पूतशासनाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन आत्मा नाथ, मुझको भी पावन करो।
नमूँ नमूँ नत माथ, अर्घ चढ़ाकर पूजहूँ।।5।।

ॐ ह्रीं पूतात्मने श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमज्योति' भगवान, केवलज्ञान प्रकाशमय।
नमूँ नमूं गुणखान, मल्लिनाथ भगवान को।।6।।

ॐ ह्रीं परमज्योतिषे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित में अध्यक्ष, 'धर्माध्यक्ष' प्रसिद्ध हो।
धर्म न हो विध्वस्त, पूजूँ नित्य परोक्ष ही।।7।।

ॐ ह्रीं धर्माध्यक्षाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय दमन करंत, प्रभो! 'दमीश्वर' आप हैं।
शम दम धर्म दिशंत, नमूँ जितेन्द्रिय हेतु हैं।।8।।

ॐ ह्रीं दमीश्वराय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'श्रीपति' शिवश्री नाथ, स्वर्गमोक्ष श्री देत हो।
मिले सभी गुण साथ, पूजूँ मल्लिजिनेश को।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीपतये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रातिहार्य ऐश्वर्य, धरें मल्लि 'भगवान' हैं।
पुनः मोक्ष स्थैर्य, लिया जजूँ तीर्थेश को।।0।।

ॐ ह्रीं भगवते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शत इन्द्रों से पूज्य, 'अर्हन्' तीर्थ स्वरूप हो।
पाऊँ जिनपद पूज्य, पूजूँ तुम पदपद्म को।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानदर्शनावर्ण, रज हैं धूली के सदृश।
इनका कीना नाश, 'अरज' आपको नित जजूँ।।12।।

ॐ ह्रीं अरजसे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब आवरण विनाश, सिद्ध लोक में जा बसे।
पूर्ण करो मम आश, जजूँ 'विरज' पद हेतु मैं।।13।।

ॐ ह्रीं विरजसे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन तीर्थ विशुद्ध, 'शुचि' ब्रह्मा में लीन हो।
मेरा मन हो शुद्ध, पूजूँ त्रिकरण शुद्धि से।।14।।

ॐ ह्रीं शुचये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवदधि तिरते भव्य, जिससे तीर्थ प्रसिद्ध है।
प्रभो 'तीर्थकृत' नव्य, जजूँ तिरूँ भवसिंधु से।।15।।

ॐ ह्रीं तीर्थकृते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान अनंत, गुण अनंत के तुम धनी।
नमूँ नमूँ भगवंत, अविकल गुणनिधि हेतु मैं।।16।।

ॐ ह्रीं केवलिने श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रों के पति आप, मुनि 'ईशान' तुम्हें कहें।
भक्त बने निष्पाप, पूजूँ समरस हेतु मैं।।17।।

ॐ ह्रीं ईशानाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट विधार्चन योग्य, मुनि 'पूजार्ह' तुम्हें कहें।
पाऊँ निजपद योग्य, इसी हेतु पूजा करूँ।।18।।

ॐ ह्रीं पूजार्हाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घात घातिया कर्म, आप 'स्नातक' मान्य हैं।
मिले मोक्ष का मर्म, तुम पद पूजूँ भक्ति से।।19।।

ॐ ह्रीं स्नातकाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्रव्य भाव नोकर्म, त्रिविध मलों विरहित प्रभो!।
नमूँ 'अमल' दें शर्म, मेरा मन पावन करें।।20।।

ॐ ह्रीं अमलाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमित दीप्ति से कांत, हे 'अनंतदीप्ति' प्रभो!।
गुण की दीप्ति अनंत, नमूँ तुम्हें बहु प्रीति से।।21।।

ॐ ह्रीं अनंतदीप्तये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण सुज्ञान स्वरूप, 'ज्ञानात्मा' लोकाग्र में।
नमूँ नमूँ चिद्रूप, ज्ञानज्योति प्रगटित करूँ।।22।।

ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंबुद्ध' भगवान्, गुरु बिन ज्ञान अपूर्व था।
रत्नत्रय निधिमान, बनूँ आपकी भक्ति से।।23।।

ॐ ह्रीं स्वयंबुद्धाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन जन के नाथ, आप 'प्रजापति' मान्य हो।
मुझको करो सनाथ, चिन्मय गुण विकसित करो।।24।।

ॐ ह्रीं प्रजापतये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवबंधन से 'मुक्त', पूर्ण स्वतंत्र तुम्हीं प्रभो।
मुझको करिये मुक्त, चरणों में आश्रय चहूँ।।25।।

ॐ ह्रीं मुक्ताय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाइस परिषह कष्ट, सहने में सक्षम हुये।
अतः कहाये 'शक्त', सहनशक्ति हित मैं नमूँ।।26।।

ॐ ह्रीं शक्ताय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब बाधा उपसर्ग, रहित आप परमातमा।
'निराबाध' संसर्ग, मेरी सब बाधा हरे।।27।।

ॐ ह्रीं निराबाधाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

काल कला से शून्य, रत्नवृष्टि माँ के महल।
कवलाहार विशून्य, 'निष्कल' की संस्तुति करूँ।।28।।

ॐ ह्रीं निष्कलाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भुवेनश्वर' त्रैलोक्य, ईश्वर पूज्य त्रिलोक में।
हो जाऊँ अक्षोभ्य, भेदविज्ञान प्रकाश से।।29।।

ॐ ह्रीं भुवनेश्वराय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्माञ्जन से शून्य, अठरह दोष विमुक्त हो।
हो जाऊँ भव शून्य, नमूँ 'निरञ्जन' देव को।।30।।

ॐ ह्रीं निरञ्जनाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगज्ज्योति' चिद्रूप, लोक अलोक विलोकते।
चिन्मय ज्योतिस्वरूप, पाऊँ आतम ज्योति मैं।।31।।

ॐ ह्रीं जगज्ज्योतिषे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वापर अविरोध, स्याद्वादमय हैं वचन।
'निरुक्तोक्ति' गतशोक[1], नमूँ स्वात्मसंपति मिले।।32।।

ॐ ह्रीं निरुक्तोक्तये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'निरामय' आप, सभी रोग से दूर हो।
नमत नशें सब पाप, पूर्ण स्वस्थता प्राप्त हो।।33।।

ॐ ह्रीं निरामयाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. शोक रहित।

'अचलस्थिति' भगवान, लोकशिखर पर तिष्ठते।
मिले भेदविज्ञान, नमते मन एकाग्र हो।।34।।

ॐ ह्रीं अचलस्थितये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कभी चरित से नाथ! नहीं चलित हों स्वप्न में।
ज्ञानपूर्णता साथ, प्रभु 'अक्षोभ्य' नमूँ सदा।।35।।

ॐ ह्रीं अक्षोभ्याय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोकशिखर के अग्र, तिष्ठ रहे 'कूटस्थ' हो।
मोह शैल को वज्र, स्थिर रूप तुम्हें नमूँ।।36।।

ॐ ह्रीं कूटस्थाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गमनागमन विहीन, 'स्थाणु' जन्म मृत्यू रहित।
रोग शोक हो क्षीण, वंदत सुस्थिर पद मिले।।37।।

ॐ ह्रीं स्थाणवे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अक्षय' नाश विहीन, इन्द्रिय विरहित आप हो।
अक्षय पद सुख लीन, नमूँ पूर्ण सुख हेतु मैं।।38।।

ॐ ह्रीं अक्षयाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन ऊपर आप, ले जाते हैं 'अग्रणी'।
मुझको भी हे नाथ! चरणों में स्थान दो।।39।।

ॐ ह्रीं अग्रण्ये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्यों को प्रभु मोक्ष, पहुँचाते हो 'ग्रामणी'।
नमत मिले सब सौख्य, शिवपुर मार्ग प्रशस्त हो।।40।।

ॐ ह्रीं ग्रामण्ये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'नेता' आप महान्, शिवपथ दिखलाते सदा।
हमें करो धनवान, रत्नत्रय निधि देय के।।41।।

ॐ ह्रीं नेत्रे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांगमय शास्त्र, रचा 'प्रणेता' हो प्रभो!।
मिले ध्यानमय शस्त्र, मोहमल्ल नाशूँ त्वरित।।42।।

ॐ ह्रीं प्रणेत्रे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

न्याय-नीति के शास्त्र, उपदेशा है विश्व को।
'न्यायशास्त्रकृत' नाथ! नमत न्याय मुझको मिले।।43।।

ॐ ह्रीं न्यायशास्त्रकृते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हित उपदेशी देव, 'शास्ता' गुरु जग मान्य हो।
मेटो अहित कुटेव[1], नमूँ स्वात्महित मैं तुम्हें।।44।।

ॐ ह्रीं शास्त्रे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्तुस्वभावी धर्म, क्षमादि रत्नत्रय दया।
'धर्मपती' दो शर्म[2], चउविध धर्म प्रचार हो।।45।।

ॐ ह्रीं धर्मपतये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसहित हो 'धर्म्य' धर्मरूप परिणत हुये।
मिले मोक्ष का मर्म, नमूँ प्रभो! सुख शांति दो।।46।।

ॐ ह्रीं धर्म्याय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मस्वरूप जिनेश, 'धर्मात्मा' त्रिभुवन गुरू।
संस्तव करूँ हमेश, धर्मरूप मैं भी बनूँ।।47।।

ॐ ह्रीं धर्मात्मने श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चारित तीर्थ महान, उसके कर्ता नाथ हैं।
'धर्मतीर्थकृत्' नाम, स्वात्म शुद्धि हेतू नमूँ।।48।।

ॐ ह्रीं धर्मतीर्थकृते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मध्वजा है नित्य, 'वृषध्वज' माने लोक में।
आत्मधर्म हो नित्य, मैं वंदूँ गुणहेतु नित।।49।।

ॐ ह्रीं वृषध्वजाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसारूप, उसके स्वामी आप ही।
मिले स्वात्म चिद्रूप, 'वृषाधीश' तुमको नमूँ।।50।।

ॐ ह्रीं वृषाधीशाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सौमराजी छंद–

महापुण्य का चिन्ह है आपका ही।
नमूँ नित्य 'वृषकेतु' रोगादि नाशो।।51।।

ॐ ह्रीं वृषकेतवे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. खोटी आदत। 2. सुख।

'वृषायुध' महामृत्यु मारा धरम से।
जरा मृत्यु नाशो, हमारे नमूँ मैं।।52।।
ॐ ह्रीं वृषायुधाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया धर्म वर्षा, अतः 'वृष' तुम्हीं हो।
हमें बोधि देवो, नमूँ भक्ति से मैं।।53।।
ॐ ह्रीं वृषाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'वृषपती' हो, अहिंसा के स्वामी।
नमूँ मैं मुझे पूर्ण आरोग्य देवो।।54।।
ॐ ह्रीं वृषपतये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा भव्य को पोषते आप भर्ता।
नमूँ सद्गुणों को, भरो नाथ मुझमें।।55।।
ॐ ह्रीं भर्त्रे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप वृषभांक सद्धर्म चिन्हित।
नमूँ धर्म मेरे, अनंते मिलेंगे।।56।।
ॐ ह्रीं वृषभांकाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वृषोद्भव' धरा धर्म पूरब भवों में।
नमूँ मैं मुझे आत्म संपत्ति देवो।।57।।
ॐ ह्रीं वृषोद्भवाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! आप 'हीरण्यनाभी' नमूँ मैं।
सुनाभी सभी से अधिक श्रेष्ठ सुंदर।।58।।
ॐ ह्रीं हिरण्यनाभये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! ज्ञान से व्याप्त आत्मा जगत में।
नमूँ 'भूतआत्मा' सभी शोक नाशो।।59।।
ॐ ह्रीं भूतात्मने श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जीव रक्षो, प्रभो! 'भूतभृद्' हो।
दयादृष्टि कीजे, पुनर्जन्म ना हो।।60।।
ॐ ह्रीं भूतभृते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ 'भूतभावन' दरश शुद्धि आदी।
धरीं सोलहों, भावना श्रेष्ठ स्वामी।।61।।
ॐ ह्रीं भूतभावनाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभव' आपका जन्म उत्कृष्ट माना।
नमूँ मैं बनू श्लाघ्य शिवमार्ग पाके।।62।।
ॐ ह्रीं प्रभवाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विभव' दूर संसार से आप हैं ही।
सफल जन्म मेरा करो शीश नाऊँ।।63।।
ॐ ह्रीं विभवाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विभा ज्ञानदीप्ती, अतः आप 'भास्वान्'।
मुझे पूर्ण विज्ञान दो याचना ये।।64।।
ॐ ह्रीं भास्वते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हृदय में हुये भव्य के 'भव' कहाये।
सदा चित्त में आप तिष्ठो नमूँ मैं।।65।।
ॐ ह्रीं भवाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनी के हृदय में रहो 'भाव' तुम हो।
हमारे हृदय के तिमिर को विनाशो।।66।।
ॐ ह्रीं भावाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'भवांतक' हो स्वामी, किया अंत भव का।
भवांभोधि से भक्ति ही तारती है।।67।।
ॐ ह्रीं भवान्तकाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रसू सौध में मास नौ रत्न वर्षे।
प्रभू नाम 'हीरण्यगर्भा' नमूँ मैं।।68।।
ॐ ह्रीं हिरण्यगर्भाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें सेव माँ की, सुरी श्री हि आदी।
नमूँ नाथ 'श्रीगर्भ' श्री प्राप्त होवे।।69।।
ॐ ह्रीं श्रीगर्भाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकैक साम्राज्य पाया तुम्हीं ने।
नमूँ मैं 'प्रभूताविभव' सौख्य देवो।।70।।

ॐ ह्रीं प्रभूतविभवाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभव' आप संसार से हीन सिद्धा।
नमूँ पंच संसार का नाश कीजे।।71।।

ॐ ह्रीं अभवाय सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'स्वयंप्रभु' चिदात्मा, स्वयं नाथ सबके।
स्वयं सिद्ध कीजे, नमूँ भक्ति से मैं।।72।।

ॐ ह्रीं स्वयंप्रभवे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रभूतातमा' आप, अस्ती स्वभावी।
मुझे सिद्धि दीजे नमूँ शीश नाके।।73।।

ॐ ह्रीं प्रभूतात्मने श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'भूतनाथा', सभी पे दयालू।
दया दान दीजे, सुचारित्र पूरो।।74।।

ॐ ह्रीं भूतनाथाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगत्प्रभु' त्रिलोकेश सुख शांति दीजे।
नमूँ मैं सभी रोग शोकादि नाशो।।75।।

ॐ ह्रीं जगत्प्रभवे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं नाथ 'सर्वादि' हो श्रेष्ठ सबमें।
नमूँ मैं सुसम्यक्त्व निधि दान दीजे।।76।।

ॐ ह्रीं सर्वादये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुकैवल्यदृक् से सभी विश्व देखा।
नमूँ 'सर्वदृक्' शुद्ध सम्यक्त्व कीजे।।77।।

ॐ ह्रीं सर्वदृशे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी जीव हितकारि, हो 'सार्व' जग में।
नमूँ चार आराधना, पूर्ण कीजे।।78।।

ॐ ह्रीं सार्वाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिलोकं त्रिकालं, सभी वस्तु ज्ञाता।
नमूँ आप 'सर्वज्ञ' मेटो असाता।।79।।

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं 'सर्वदर्शन' सुसम्यक्त्व क्षायिक।
मेरे ज्ञानचारित्र सत्यार्थ कर दो।।80।।

ॐ ह्रीं सर्वदर्शनाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी वस्तु प्रतिबिंबती आप में ही।
मेरा ज्ञान कैवल्य कीजे नमूँ मैं।।81।।

ॐ ह्रीं सर्वात्मने श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी प्राणि के ईश, वंदूं सदा मैं।
प्रभो 'सर्वलोकेश' भवदुःख मेटो।।82।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकेशाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी लोक को जानते 'सर्ववित्' हो।
प्रभो ज्ञानज्योती मुझे दो नमूँ मैं।।83।।

ॐ ह्रीं सर्वविदे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयी पंच संसार के जो नमूँ मैं।
प्रभो 'सर्वलोकैकजित्' शोक नाशो।।84।।

ॐ ह्रीं सर्वलोकजिते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुगति' मुक्ति पंचमगती प्राप्त की है।
सुगति में गमन हो इसी हेतु वंदूँ।।85।।

ॐ ह्रीं सुगतये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुश्रुत' शास्त्र सम्यक् प्रगट आपसे हैं।
तथा आप विख्यात जग में नमूँ मैं।।86।।

ॐ ह्रीं सुश्रुताय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी की सुनी प्रार्थना आप 'सुश्रुत्'।
मुझे स्वात्म संपत्ति दीजे नमूँ मैं।।87।।

ॐ ह्रीं सुश्रुते श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुवाक्' सप्तभंगी युता दिव्य वाणी।
उसी में रमूं मैं इसी हेतु वंदूँ।।88।।

ॐ ह्रीं सुवाचे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! पंच आचार से 'सूरि' माने।
नमूँ आपको बुद्धि सम्यक् करीजे।।89।।

ॐ ह्रीं सूरये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बहुश्रुत' सभी शास्त्र के मर्मज्ञाता।
तुम्हीं से हुआ श्रुत नमूँ ज्ञान हेतू।।90।।

ॐ ह्रीं बहुश्रुताय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ आप 'विश्रुत' जगत् में प्रसिद्धा।
सभी इन्द्र धरणेन्द्र से वंद्य वंदूँ।।91।।

ॐ ह्रीं विश्रुताय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अधो मध्य ऊरध त्रिजग व्याप्त कीना।।
नमूँ 'विश्वतःपाद' ज्ञानी किरण से।।92।।

ॐ ह्रीं विश्वतःपादाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिजग में हि मस्तक त्रिलोकाग्र राजें।
नमूँ 'विश्वशीर्षा' करो मेरी रक्षा।।93।।

ॐ ह्रीं विश्वशीर्षाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी प्राणियों की सुनी आप अर्जी।
नमूँ मैं 'शुचिश्रव' हमें बोधि देवो।।94।।

ॐ ह्रीं शुचिश्रवसे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सहसशीर्ष' भगवन्! अनंते सुखी हो।
मुझे स्वात्म सुख दीजिये मैं जजूँ अब।।95।।

ॐ ह्रीं सहस्रशीर्षाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजात्मा को जाना चराचर सभी भी।
प्रभो! 'क्षेत्रज्ञा' नमूँ स्वस्थहेतू।।96।।

ॐ ह्रीं क्षेत्रज्ञाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंते पदारथ तुम्हीं जानते हो।
'सहस्राक्ष' स्वामिन्! नमूँ प्रीति से मैं।।97।।

ॐ ह्रीं सहस्राक्षाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंते बली नंत किरणों सुव्यापी।
'सहसपात्' वंदूं मुझे शक्ति दीजे।।98।।

ॐ ह्रीं सहस्रपदे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं भूतभावी व संप्रति के स्वामी।
नमूँ 'भूतभव्यभवद्भर्तृ' तुमको।।99।।

ॐ ह्रीं भूतभव्यभवद्भर्त्रे श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविद्या अखिल के तुम्हीं नाथ माने।
अतः 'विश्वविद्यामहेश्वर' नमूँ मैं।।100।।

ॐ ह्रीं विश्वविद्यामहेश्वराय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

पाँच महाव्रत ईश, नाम 'महाव्रतपति' धरा।
जजूँ मल्लितीर्थेश, नाममंत्र प्रभु आपके।।101।।

ॐ ह्रीं महाव्रतपतये श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मह्य' आप जगपूज्य, मल्लिनाथ भगवंत हो।
मिले स्वात्मपद पूज्य, नाममंत्र को पूजते।।102।।

ॐ ह्रीं मह्याय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाकान्तिधर' आप अतिशय कांतिनिधान हो।
नाममंत्र तुम जाप, करे अतुल सुखसंपदा।।103।।

ॐ ह्रीं महाकांतिधराय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबके स्वामी इष्ट, अतः 'अधिप' सुरगण कहें।
नाशो सर्व अनिष्ट, मल्लिनाथ तुम पूजहूँ।।104।।

ॐ ह्रीं अधिपाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामैत्रिमय' नाथ! सबसे मैत्रीभाव है।
मल्लिनाथ तुम जाप, त्रिभुवन को वश में करे।।105।।

ॐ ह्रीं महामैत्रीमयाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनवधि गुण के नाथ, तुम्हें 'अमेय' मुनी कहें।
पूजत बनूँ सनाथ, नाममंत्र प्रभु आपके।।106।।

ॐ ह्रीं अमेयाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महोपाय' तुम नाथ! शिव के श्रेष्ठ उपाययुत।
पूजूँ मल्लीनाथ, नाममंत्र को नित जपूँ।।107।।

ॐ ह्रीं महोपायाय श्रीमल्लिनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ!'महोमय' आप, अति उत्सव अरु ज्ञानयुत।
मल्लिनाथ तुम जाप, सर्व उपद्रव नाशता।।108।।

ॐ ह्रीं महोमयाय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

मल्लिनाथ भगवंत को, नमन करूं शत बार।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, पाऊं निजसुख सार।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतनाममंत्रसमन्विताय श्रीमल्लिनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमल्लिनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–शेरछंद–

जय जय श्री जिनदेव देव देव हमारे।
जय जय प्रभो! तुम सेव करें सुरपति सारे।।
जय जय अनंत सौख्य के भंडार आप हो।
जय जय समोसरण के सर्वस्व आप हो।।1।।

मुनिवर विशाख आदि अट्ठाईस गणधरा।
चालिस हजार साधु थे व्रतशील गुणधरा।।
श्रीबंधुषेणा गणिनी आर्या प्रधान थीं।
पचपन हजार आर्यिकाएँ गुण निधान थीं।।2।।

श्रावक थे एक लाख तीन लाख श्राविका।
तिर्यंच थे संख्यात देव थे असंख्यका।।
तनु धनु पचीस आयू पचपन सहस बरस।
है चिन्ह कलश देह वर्ण स्वर्ण के सदृश।।3।।

जो भव्य भक्ति से तुम्हें निज शीश नावते।
वे शिरोरोग नाश स्मृति शक्ति पावते।।
जो एकटक हो नेत्र से प्रभु आप को निरखें।
उन मोतिबिन्दु आदि नेत्र व्याधियाँ नशें।।4।।

जो कान से अति प्रीति से तुम वाणि को सुनें।
उनके समस्त कर्ण रोग भागते क्षण में।।
जो मुख से आपकी सदैव संस्तुती करें।
मुख दंत जिह्वा तालु रोग शीघ्र परिहरें।।5।।

जो कंठ में प्रभु आपकी गुणमाल पहनते।
उनके समस्त कंठ ग्रीवा रोग विनशते।।
श्वासोच्छ्वास से जो आप मंत्र को जपते।
सब श्वांस नासिकादि रोग उनके विनशते।।6।।

जो निज हृदय कमल में आप ध्यान करे हैं।
वे सर्व हृदय रोग आदि क्षण में हरे हैं।।
जो नाभिकमल में तुम्हें नित धारते मुदा।
नश जाती उनकी सर्व उदर व्याधियाँ व्यथा।।7।।

जो पैर से जिनगृह में आके नृत्य करे हैं।
वे घुटने पैर रोग सर्व नष्ट करे हैं।।

पंचांग जो प्रणाम करें आपको सदा।
उनके समस्त देह रोग क्षण में हों विदा।।8।।

जो मन में आपके गुणों का स्मरण करें।
वे मानसिक व्यथा समस्त ही हरण करें।।
ये तो कुछेक फल प्रभो! तुम भक्ति किये से।
फल तो अचिन्त्य है न कोई कह सके उसे।।9।।

तुम भक्ति अकेली समस्त कर्म हर सके।
तुम भक्ति अकेली अनंत गुण भी भर सके।।
तुम भक्ति भक्त को स्वयं भगवान बनाती।
फिर कौन-सी वो वस्तु जिसे ये न दिलाती।।10।।

अतएव नाथ! आप चरण की शरण लिया।
संपूर्ण व्यथा मेट दीजिए अरज किया।।
अन्यत्र नहीं जाऊँगा मैंने परण किया।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये यहँ पे धरण दिया।।11।।

ॐ ह्रीं श्री बालयतिमल्लिनाथजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो पांच बालयति का विधान, श्रद्धा भक्ती से करते हैं।
वे त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, पाकर स्वात्मा में रमते हैं।।
देवर्षिदेव लौकांतिकसुर, होकर अंतिम भव लभते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति भास्कर हो, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ४
श्री नेमिनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना –

(तर्ज –करो कल्याण आतम का……)

नमन श्री नेमि जिनवर को, बालयति स्वात्मनिधि पायी।
तजी राजीमती कांता, तपो लक्ष्मी हृदय भायी।।
करूँ आह्वान हे भगवन्! पधारो मुझ मनोम्बुज में।
करूँ मैं अर्चना रुचि से, अहो उत्तम घड़ी आई।।
नमन श्री...।।टेक.।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

(तर्ज –ऐ माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी…..)

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान -2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।टेक.।।
भव भव में नीर पिया, नहिं प्यास बुझा पाये।
तुम पद धारा देने, पद्माकर जल लाये।।
निज का अघमल धोने के लिए, जलधारा करने आये हैं।।
भगवान.।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।

चंदन चंदा किरणें, नहिं शीतल कर सकते।
तुम पद अर्चा करने, केशर चंदन घिसके।।
तनु ताप शांत हेतू चंदन, चरणों में चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आये हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
निज सुख के खंड हुए, नहिं अक्षय पद पाये।
सित अक्षत ले करके, तुम पास प्रभो! आये।।
अविनश्वर सुख पाने के लिए, सित पुंज चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
हे नाथ! कामरिपु ने, त्रिभुवन को वश्य किया।
इससे बचने हेतू, बहु सुरभित पुष्प लिया।।
निज आत्म गुणों की सुरभि हेतु, ये पुष्प चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
बहुविध पकवान चखे, नहिं भूख मिटा पाये।
इस हेतू चरु लेकर, तुम निकट प्रभो! आये।।
निज आत्मा की तृप्ती के लिए, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
निज मन में अंधेरा है, अज्ञान तिमिर छाया।
इस हेतू दीपक ले, प्रभु पास अभी आया।।
निज ज्ञानज्योति पाने के लिए, हम आरति करने आये हैं।।
भगवान.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
कर्मों ने दुःख दिया, तुम कर्मरहित स्वामी।
अतएव धूप लेके, हम आये जगनामी।।
सब अशुभकर्म के भस्महेतु, हम धूप जलाने आये हैं।।
भगवान.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
बहुविध के फल खाये, नहिं रसना तृप्त हुई।
ताजे फल ले करके, प्रभु पूजूँ बुद्धि हुई।।
इच्छाओं की पूर्ती के लिए, फल अर्पण करने आये हैं।।
भगवान.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हे नेमिनाथ! तुम भक्ती से, निज शक्ति बढ़ाने आए हैं।
भगवान-2 तुम्हारे चरणों की, हम पूजा करने आये हैं।।
प्रभु तुम गुण की अर्चा, भवतारन हारी है।
भवदधि में डूबे को, अवलंबनकारी है।।
निज ''ज्ञानमती'' पूर्ती के लिए, हम अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
भगवान.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेर छंद –

यमुना नदी का नीर, स्वर्णभृंग में भरूँ।
श्रीनेमिनाथ के चरण में, धार मैं करूँ।।
चउसंघ में सब लोक में भि शांति कीजिए।
बस ये ही एक याचना प्रभु पूर्ण कीजिए।।10।।

शांतये शांतिधारा।

हे नेमि! नीलकमल आप चिन्ह शोभता।
ये सुरभि पुष्प भी तो घ्राण नयन मोहता।।
प्रभु पाद कमल में अभी पुष्पांजलि करूँ।
सब रोग शोक दूर हों निज संपदा भरूँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

श्रीसमुद्रविजय शौरीपुरि, नृप पितु मात शिवादेवी।
गर्भ बसे शुभ स्वप्न दिखाकर, तिथि कार्तिक शुक्ला षष्ठी।।
गर्भकल्याणक पूजा करते, मिले राह कल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लाषष्ठ्यां श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

श्रावण शुक्ला छठ में मति श्रुत, अवधिज्ञानि प्रभु जन्मे थे।
मेरू पर जन्माभिषेक में, देव देवियाँ हर्षे थे।।

जन्मकल्याणक पूजा करते, मिले राह उत्थान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

चले ब्याहने राजुल को, पशु बंधे देख वैराग्य हुआ।
श्रावण सुदि छठ सहस्राम्र वन, में प्रभु दीक्षा स्वयं लिया।
दीक्षा तिथि जजते मिल जावे, बुद्धि आत्मकल्याण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लाषष्ठ्यां श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

आश्विन सुदि एकम पूर्वाण्हे, ऊर्जयंत गिरि पर तिष्ठे।
केवलज्ञान सूर्य प्रगटा तब, प्रभु को बांसवृक्ष नीचे।।
समवसरण में किया सभी ने, पूजा केवलज्ञान की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाप्रतिपदायां श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकरकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, प्रभु के पंचकल्याण की।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।
वन्दे जिनवरम्-4।।

प्रभु गिरनार शैल से मुक्ती, रमा वरी शिवधाम गये।
सुदि आषाढ़ सप्तमी सुरगण, वंद्य नेमि जगपूज्य हुए।।

जो निर्वाण कल्याणक पूजें, मिले राह निर्वाण की।।
इन्द्र सभी मिल भक्ती करते, तीर्थंकर भगवान की।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लासप्तम्यां श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

नेमिनाथ की वंदना, करे नियम को पूर्ण।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करत, होवें सब दुख चूर्ण।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

तृतीय वलय में अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

नेमिनाथ भगवंत को, वंदूं शीश नमाय।
पुष्पांजलि से पूजते, भव भव दुःख नशायं।।1।।

अथ मण्डलस्योपरि तृतीयवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

–दोहा–

समीचीन गुण के निमित, अतिशय स्थूल महान्।
'स्थविष्ठ' प्रभु नेमि को, नमत बनूँ गुणवान्।।1।।

ॐ ह्रीं स्थविष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादिकगुण वृद्ध प्रभु, इससे 'स्थविर' आप।
दर्शन ज्ञान चरित्र हित, नमूँ नेमि नत माथ।।2।।

ॐ ह्रीं स्थविराय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में सुप्रशस्त हो, 'ज्येष्ठ' नेमि भगवान्।
आत्म सुधारस प्राप्त हो, नमते निज पर ज्ञान।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबमें अग्रेसर तुम्हीं, 'प्रष्ठ' नाम से ख्यात।
आत्मसुरभि फैले जगत, नमत आत्मसुख सात्।।4।।

ॐ ह्रीं प्रष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब भव्यों को प्रिय अधिक, 'प्रेष्ठ' आप जगमीत।
गुण अनन्तयुत नेमिप्रभु, जजूं नमूँ धर प्रीत।।5।।

ॐ ह्रीं प्रेष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुबुद्धि तुम, अति विस्तीर्ण प्रसिद्ध।
प्रभु 'वरिष्ठधी' तुम नमूँ, गुणमणि धरूं समृद्ध।।6।।

ॐ ह्रीं वरिष्ठधिये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक अग्र पर तिष्ठते, अतिशय स्थिर नित्य।
इसीलिये प्रभु स्थेष्ठ, नमत लहूँ सुख नित्य।।7।।

ॐ ह्रीं स्थेष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन के गुरु आप हैं, नाथ 'गरिष्ठ' प्रधान।
स्वात्मामृत के पान से, बनूँ स्वस्थ अमलान।।8।।

ॐ ह्रीं गरिष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणपेक्षा बहुरूप को, धारण करते नाथ।
प्रभु 'बंहिष्ठ' तुम्हें नमूँ, मिले सौख्य श्रीसाथ।।9।।

ॐ ह्रीं बंहिष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहु प्रशंसनीया सुगुण, प्रभो 'श्रेष्ठ' तुम नाम।
अनुपम गुणनिधि हेतु मैं, नमूँ नेमि शिवधाम।।10।।

ॐ ह्रीं श्रेष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चर्मचक्षु से आप हैं, अतिशय सूक्ष्म जिनेश।
प्रभु 'अणिष्ठ' तुमको नमूँ, मिटे जगत् का क्लेश।।11।।

ॐ ह्रीं अणिष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत्पूज्य वाणी विमल, प्रभु 'गरिष्ठगी' नाम।
मम रसना हो रसवती, शत शत करूँ प्रणाम।।12।।

ॐ ह्रीं गरिष्ठगिरे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती संसार को, नष्ट किया भगवान्।
नमूँ 'विश्वमुट्' नेमिप्रभु, पाऊँ सौख्य निधान।।13।।

ॐ ह्रीं विश्वमुचे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि रचना किया, आप 'विश्वसृट्' मान्य।
धर्म संपदा पूर्ण हो, नमते सुख धन धान्य।।14।।

ॐ ह्रीं विश्वसृजे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अखिल लोक के शीश हो, नेमि प्रभो! 'विश्वेट्'।
सप्तपरम स्थान हित, वंदूं मस्तक टेक।।15।।

ॐ ह्रीं विश्वेशे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जग की रक्षा करो, अभयदान दे नाथ।
नाम 'विश्वभुक्' मैं नमूँ, पूजत बनूँ सनाथ।।16।।

ॐ ह्रीं विश्वभुजे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ले जाते शुचिकर्म में, सब जीवों को नाथ।
नेमि! 'विश्वनायक' तुम्हीं, नमूँ नमाऊँ माथ।।17।।

ॐ ह्रीं विश्वनायकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुरश्मि से, व्यापा लोकालोक।
'विश्वाशी' भगवान को, वंदूँ देऊँ धोक।।18।।

ॐ ह्रीं विश्वाशिषे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विश्वरूप आत्मा' तुम्हीं, सकल विश्व में आप।
व्याप्त लोकपूरण प्रथित, समुद्घात से नाथ।।19।।

ॐ ह्रीं विश्वरूपात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व विश्व से पार हैं, आप 'विश्वजित्' नाम।
सकल गुणों की राशि हित, करूँ अनंत प्रणाम।।20।।

ॐ ह्रीं विश्वजिते श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विजितान्तक' मृत्यूजयी, नेमि! नमूँ रुचि धार।
शक्ती दो प्रभु मोह यम, काम मल्ल दूं मार।।21।।

ॐ ह्रीं विजितान्तकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नष्ट किया भव भ्रमण तुम, नाथ 'विभव' जग मान्य।
जन्ममरण दुख क्षय करो, तुम जग में प्राधान्य।।22।।

ॐ ह्रीं विभवाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात भयों से दूर प्रभु, 'विभय' करो भय दूर।
सर्वकांति नित नेमि को, नमत मिले सुखपूर।।23।

ॐ ह्रीं विभयाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंत बलशालि तुम, 'वीर' नाम से ख्यात।
मेरी नंतचतुष्टयी, दीजे श्रुत विख्यात।।24।।

ॐ ह्रीं वीराय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'विशोक' त्रिलोक में, किया शोक को दूर।
मेरे शोक हरो सभी, नमूँ नेमि गुणपूर।।25।।

ॐ ह्रीं विशोकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वृद्धावस्था से रहित, 'विजर' नाम से ख्यात।
जरा जीर्ण मेरी करो, मेटो भव भव त्रास।।26।।

ॐ ह्रीं विजराय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं जीर्ण होते कभी, 'अजरन्'[1] नाम धरंत।
सभी व्याधि दुख क्षीण हों, नमूँ नाथ शिवकांत।।27।।

ॐ ह्रीं अजरते श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

राग रहित हो देव तुम, अतः 'विराग' प्रसिद्ध।
नमूँ विरागी मैं बनूँ, पाऊँ निजगुण रिद्धि।।28।।

ॐ ह्रीं विरागाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पाप से 'विरत' हो, भवसुख विरत महान्।
मेरे महाव्रत पूरिये, नमूँ तपोधनवान।।29।।

ॐ ह्रीं विरताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्वपरिग्रह शून्य हो, नाथ! 'असंग' अनूप।
परिग्रह ग्रंथि से छुटूं पाऊँ निज चिद्रूप।।30।।

ॐ ह्रीं असंगाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. आदिपुराण में 'जरन्' पद है।

सब विषयों से भिन्न हो, पूर्ण पवित्र 'विविक्त'।
मुझको भेदविज्ञान दो, होऊँ पर से रिक्त।।31।।
ॐ ह्रीं विविक्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मत्सर आदिक दोष से, रहित गुणों की राशि।
नमूँ 'वीतमत्सर' तुम्हें, पाऊँ निज सुखराशि।।32।।
ॐ ह्रीं वीतमत्सराय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिष्यों के बांधव सहज, हित उपदेशी सूर्य।
'विनेयजनताबंधु' को, नमूँ तमोहर सूर्य।।33।।
ॐ ह्रीं विनेयजनताबंधवे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब कल्मष से दूर हो, नमत पाप हो क्षीण।
'विलीन सर्व कल्मष' तुरत, करो सौख्य अक्षीण।।34।।
ॐ ह्रीं विलीनाशेषकल्मषाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिरमा के साथ में, योग 'वियोग' महान।
इष्टवियोगादिक सभी, दुःख हरो भगवान।।35।।
ॐ ह्रीं वियोगाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ अंग लक्षण कहा, योग 'योगवित्' नाथ।
ध्यानयोग के हेतु मैं, नमूँ जोड़ द्वय हाथ।।36।।
ॐ ह्रीं योगविदे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब पदार्थ को जानते, आप श्रेष्ठ 'विद्वान'।
विद्याधन मुझको मिले, नमूँ नंत गुणवान्।।37।।
ॐ ह्रीं विदुषे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म उभय सृष्टी किया, प्रभो 'विधाता' सिद्ध।
मुनीधर्म मुझको मिले, नमूँ करूँ यमविद्ध।।38।।
ॐ ह्रीं विधात्रे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निरतिचार चारित्रधर, 'सुविधि' कहाए आप।
पंचम चारित हेतु मैं, नमूँ हरो भव ताप।।39।।
ॐ ह्रीं सुविधये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ध्यानी थे तुम्हीं, 'सुधी' जगत में श्रेष्ठ।
धर्म शुक्ल की सिद्धि हो, नमूँ नमूँ प्रभु ज्येष्ठ।।40।।
ॐ ह्रीं सुधिये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमारूप हो क्रोधरिपु, का करके संहार।
'क्षांतिभाक्' को नमत ही, बनूँ क्षमा भंडार।।41।।
ॐ ह्रीं क्षांतिभाजे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पृथिवीमूर्ति' स्वरूप हो, सर्वंसहा महेश।
सहनशीलता गुण मिले, नमूँ हरो भव क्लेश।।42।।
ॐ ह्रीं पृथिवीमूर्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्यंतिक शांती सहित, 'शांतिभाक्' जिनराज।
परम शांति मुझको मिले, नमत पूर्ण हो काज।।43।।
ॐ ह्रीं शांतिभाजे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जल सम शीलत स्वच्छ हो, किया कर्ममल दूर।
'सलिलात्मक' मन स्वच्छ कर, भरो ज्ञानसुख पूर।।44।।
ॐ ह्रीं सलिलात्मकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीवों के प्राणसम, 'वायुमूर्ति' भगवान।
मैं निसंग बन जाऊँ प्रभु, नमूँ नमूँ सुखदान।।45।।
ॐ ह्रीं वायुमूर्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अंतर बाहर उपधि से, रहित अमूर्त असंग।
नमूँ 'असंगात्म' तुम्हें, रहूँ मुक्ति के संग।।46।।
ॐ ह्रीं असंगात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मकाष्ठ को भस्म कर, 'वह्निमूर्ति' श्रुतमान्य।
ध्यान अग्नि मुझको मिले, नमूँ आप गुरु मान्य।।47।।
ॐ ह्रीं वह्निमूर्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिंसा आदिक पाप सब, जला दिये प्रभु शीघ्र।
प्रभु 'अधर्मधक्' सिद्ध हो, नमूँ भक्ति है तीव्र।।48।।
ॐ ह्रीं अधर्मदहे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मरूप सामग्रि को, होमा सम्यक् आप।
प्रभो! 'सुयज्वा' मैं नमूँ, मैं होमूं सब पाप।।49।।
ॐ ह्रीं सुयज्वने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
निज स्वभाव आराधते, 'यजमानात्मा' सिद्ध।
आराधूं निज तत्त्व मैं, पाऊँ नवनिधि रिद्धि।।50।।
ॐ ह्रीं यजमानात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रेखता छंद–

प्रभो! स्वात्मासुखाम्बुधि में, किया अभिषेक नित उसमें।
अतः 'सुत्वा' कहाते हो, जजत ही सौख्य भरते हो।।51।।
ॐ ह्रीं सुत्वने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रभो! इन्द्रादि पूजित हो, अतः 'सूत्रामपूजित' हो।
जजत ही दृग्विशुद्धी हो, मुझे बोधी समाधी हो।।52।।
ॐ ह्रीं सूत्रामपूजिताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कुशल 'ऋत्विक्' तुम्हीं सच में, यज्ञ ज्ञानैक करने में।
स्व कर्मेंधन दहन कर दूं, प्रभो यह शक्ति दो वंदूँ।।53।।
ॐ ह्रीं ऋत्विजे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
तुम्हीं हो 'यज्ञपति' जग में, प्रमुख हो यज्ञ की विधि में।
जलाकर ध्यान अग्नी को, हवन कर लूँ नमत तुमको।।54।।
ॐ ह्रीं यज्ञपतये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शतेन्द्रों ने किया पूजा, न तुम सम अन्य है दूजा।
इसी से 'याज्य' हो स्वामी, नमूँ मैं आप अभिरामी।।55।।
ॐ ह्रीं याज्याय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हवन के अंग परधाना, अतः 'यज्ञांग' शिवधामा।
नमूँ मैं नित्य श्रद्धा से, तपोग्नी प्राप्त हो तुमसे।।56।।
ॐ ह्रीं यज्ञांगाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
न मरते आप 'अमृत' हैं, परम अमृत रसायन हैं।
प्रभो! तुमको नमन करके, विषय तृष्णा व दुःख भगते।।57।।
ॐ ह्रीं अमृताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजात्मानंद में रत हो, अशुद्धी हवन करते हो।
नमूँ 'हवि' आपको रुचि से, सुखामृत प्राप्त हो तुमसे।।58।।
ॐ ह्रीं हविषे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
गगनवत् व्याप्त हो जग में, केवलज्ञान किरणों से।
इसी से 'व्योममूर्ती' हो, नमत सुज्ञान मुझमें हो।।59।।
ॐ ह्रीं व्योममूर्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वर्ण रस गंध से रहिता, 'अमूर्तात्मा' ज्ञानसहिता।
अमूर्तिक मैं बनूँ स्वामी, तुम्हें पूजूँ जगन्नामी।।60।।
ॐ ह्रीं अमूर्तात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कर्म मल लेप से हीना, प्रभो! 'निर्लेप' गुणलीना।
बनूं निर्लेप मैं पर से, करूँ पूजा अतः रुचि से।।61।।
ॐ ह्रीं निर्लेपाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सभी रागादिमल शून्या, तुम्हीं 'निर्मल' बने पूर्णा।
आधि व्याधी सभी विनशें, नमत ही पूर्ण सुख विलसे।।62।।
ॐ ह्रीं निर्मलाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'अचल' हो सिद्ध सुस्थिर हो, लोक के अग्र अविचल हो।
अचल हो जाऊँ मैं निज में, यही फल प्राप्त कर लूँ मैं।।63।।
ॐ ह्रीं अचलाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चन्द्र सम शांति देते हो, परम आल्हाद भरते हो।
'सोममूर्ती' नमूँ तुमको, स्वात्म आल्हाद दो मुझको।।64।।
ॐ ह्रीं सोममूर्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सौम्यरूपी 'सुसौम्यात्मा', सिद्धपद प्राप्त परमात्मा।
नमूँ मैं आत्म शुचि हेतू, साम्यगुण पूर्ण कर दीजे।।65।।
ॐ ह्रीं सुसौम्यात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सूर्यसम पूर्ण तेजस्वी, ज्ञान किरणों से ओजस्वी।
'सूर्यमूर्ती' नमूँ तुमको, स्वात्म का तेज दो मुझको।।66।।
ॐ ह्रीं सूर्यमूर्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभ' केवली प्रभु हो, धर्म किरणों सहित तुम हो।
नमूँ मैं आपको शुचि हो, प्रगट कर लूं स्वात्म रवि को।।67।।
ॐ ह्रीं महाप्रभाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महामंत्रों के ज्ञाता हो, 'मंत्रवित्' नाम पाते हो।
नमूँ मैं मुक्ति के हेतू, मंत्र मिल जाय भवसेतू।।68।।
ॐ ह्रीं मंत्रविदे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्र चारों हि अनुयोगा, उन्हीं के आप उपदेष्टा।
'मंत्रकृत्' आप को प्रणमूँ, ज्ञान वाराशि को पालूँ।।69।।
ॐ ह्रीं मंत्रकृते श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंत्रमय मंत्ररूपी हो, प्रभो! 'मंत्री' मंत्रतनु हो।
हमें भी मंत्र दे दीजे, नमूँ मैं मुक्तिश्री दीजे।।70।।
ॐ ह्रीं मंत्रिणे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंत्रमूर्ती' तुम्हीं भगवन्, मंत्र अक्षरमयी तुम तन।
नमूँ तुम नाम मंत्रों को, प्राप्त कर लूं स्वात्म पद को।।71।।
ॐ ह्रीं मंत्रमूर्तये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अनंतग' मोक्ष में राजें, ज्ञान से विश्व में व्यापें।
नमूँ मैं मोक्ष प्राप्ती हित, यही भक्ती फलेगी नित।।72।।
ॐ ह्रीं अनंतगाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण स्वातन्त्र्य हो करके, 'स्वतंत्रात्मा' तुम्हीं चमके।
नमूँ मैं स्वात्म संपति दो, सभी विपदा दूर कर दो।।73।।
ॐ ह्रीं स्वतंत्राय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'तंत्रकृत्' शास्त्र के कर्ता, तुम्हीं प्रभु भावश्रुत कर्ता।
दिव्यध्वनि द्वादशांगी है, नमत ही स्वात्म निधिकर है।।74।।
ॐ ह्रीं तंत्रकृते श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुशोभन है निकट प्रभु का, अतः तुम 'स्वन्त' हो शिवदा।
नमूँ मैं दुख दरिद नाशूं, तुम्हें पा निज को परकाशूं।।75।।
ॐ ह्रीं स्वन्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मृत्यु का अंत कर दीना, 'कृतान्तान्त' नाम लीना।
नमूँ मैं सर्व दुख भागें, मृत्यु भयभीत हो भागे।।76।।
ॐ ह्रीं कृतान्तान्ताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जैन सिद्धांत के कर्ता, सभी के क्षेम सुख भर्ता।
नमत 'कृतान्तकृत्' प्रभु को, जगत में सौख्य शांती हो।।77।।
ॐ ह्रीं कृतान्तकृते श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'कृती' हो पुण्य फल पायो, पुण्यराशी मुनी गायो।
नमूँ मैं पाप को नाशूं, पुण्य से स्वात्म को भासूं।।78।।
ॐ ह्रीं कृतिने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार पुरुषार्थ को कह के, 'कृतार्था' नाम पा करके।
आपने मोक्ष पद पाया, नमूँ मैं स्वस्थ हो काया।।79।।
ॐ ह्रीं कृतार्थाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'सत्कृत्य' हो जग में, सत्य कर्तव्यप्रद सच में।
प्रजा पोषण किया तुमने, नमूँ मैं स्वात्म रुचि मन में।।80।।
ॐ ह्रीं सत्कृत्याय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया सब आत्म कार्यों को, प्रभो! 'कृतकृत्य' तुमही हो।
बनूं कृतकृत्य प्रभु मैं भी, इसी से पूजहूँ नित ही।।81।।
ॐ ह्रीं कृतकृत्याय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तपस्या यज्ञ कर करके, प्रभो! 'कृतक्रतू' ज्ञान धर के।
तपस्या पूर्ण कर पाऊँ, इसी से आपको ध्याऊँ।।82।।
ॐ ह्रीं कृतक्रतवे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा अस्तित्व से स्थित हो, 'नित्य' प्रभु तीन जग में हो।
नमूँ निज आत्म गुण पाऊँ, स्वस्थ हो नित्य बन जाऊँ।।83।।
ॐ ह्रीं नित्याय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! तुम मृत्यु को जीता, सु 'मृत्युंजय' कर्म जीता।
नमूँ मैं भक्ति धर नित ही, बनूं मृत्युंजयी झट ही।।84।।
ॐ ह्रीं मृत्युंजयाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं है अन्त इस जग में, 'अमृत्यू' नाम श्रुत वर्णें।
मोक्ष पद प्राप्त है तुमको , नमूँ मैं कालजयि प्रभु को।।85।।
ॐ ह्रीं अमृत्यवे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत सम शांति पुष्टी कर, प्रभो! 'अमृतात्मा' जिनवर।
ज्ञान अमृत पिऊँ निश दिन, तुम्हें पूजूँ नमूँ प्रतिदिन।।86।।
ॐ ह्रीं अमृतात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष में आप जन्में हो, प्रभो! 'अमृतोद्भव' तुम हो।
धर्म अमृत झराते हो, जजत समरस पिलाते हो।।87।।
ॐ ह्रीं अमृतोद्भवाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदा शुद्धात्म में तन्मय, प्रभो! तुम 'ब्रह्मनिष्ठा' मय।
मुझे भी स्वात्मतन्मयता, मिले इस हेतु मैं जजता।।88।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मनिष्ठाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परंब्रह्मा' जगत्पति हो, निजात्मा रूप परिणत हो।
नमूँ निज ब्रह्मपद पाऊँ, जगत् के दुःख विनशाऊँ।।89।।
ॐ ह्रीं परंब्रह्मणे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! कैवल्य ज्ञानादी, गुणों से पूर्ण वृद्धी की।
नमूँ 'ब्रह्मात्मा' नित ही, प्राप्त कर लूं स्वगुण नित ही।।90।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं तो 'ब्रह्मसंभव' हो, स्वात्म से आप उत्पन्न हो।
आत्म के ज्ञानचारित को, प्राप्त कर लूं नमन तुमको।।91।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मसंभवाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मपती' तुम ही, सिद्ध परमेष्ठी नित ही।
नमः सिद्धेभ्यः कह करके, धरी दीक्षा नमूँ रुचि से।।92।।
ॐ ह्रीं महाब्रह्मपतये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम्हीं तो मोक्ष के स्वामी, अतः 'ब्रह्मेट्' जगनामी।
स्वात्म सुख ज्ञान मुझको दो, नमूँ मैं ब्रह्मपद दे दो।।93।।
ॐ ह्रीं ब्रह्मेजे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाब्रह्मापदेश्वर' हो, गणाधिप साधु वंदित हो।
समवसृति में विराजे हो, नमूँ प्रमुदितमना तुमको।।94।।
ॐ ह्रीं महाब्रह्मपदेश्वराय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हास्यमुख 'सुप्रसन्ना' हो, स्वर्गमुक्ती प्रदाता हो।
दुःखशोकादि हरने को, नमूँ प्रमुदितमना तुमको।।95।।
ॐ ह्रीं सुप्रसन्नाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्रसन्नात्मा' स्वामी, स्वच्छ निर्मल गुण अभिरामी।
स्वच्छ शीतल मेरा मन हो, नमत ही स्वात्मसमरस हो।।96।।
ॐ ह्रीं सुप्रसन्नात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'ज्ञान अरु धर्म दम प्रभु' हो, दयालू इन्द्रियविजयी हो।
केवली धर्मदम स्वामी, नमूँ मैं धर्म पथगामी।।97।।
ॐ ह्रीं ज्ञानधर्मदमप्रभवे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशमात्मा' तुम्हीं भगवन्, क्रोध रिपु का किया मर्दन।
शांति से कर्म को जीता, नमूँ मैं जगत् से भीता।।98।।
ॐ ह्रीं प्रशमात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रशान्तात्मा' तुम्हीं तो हो, घातिकर्मारि विजयी हो।
नमूँ मैं शांति सुख पाऊँ, निजात्मा में ही रम जाऊँ।।99।।
ॐ ह्रीं प्रशान्तात्मने श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'पुराणपुरुषोत्तम', पुराने सब में हो उत्तम।
मुक्तिलक्ष्मीपती विष्णू, नमूँ मैं होऊँ भवजिष्णू।।100।।
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–सोरठा–

'महाकारुणिक' आप, दया धर्म उपदेशिया।
नेमिनाथ प्रभु जाप, करत जन्म मृत्यू टले।।101।।
ॐ ह्रीं महाकारुणिकाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'मंता' आप महान, सब पदार्थ को जानते।
जजूँ नेमि भगवान, पूर्ण ज्ञान संपति मिले।।102।।
ॐ ह्रीं मंत्रे श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व मंत्र के ईश, 'महामंत्र' तुम नाम है।
तुम्हें नमें गणधीश, नेमिनाथ तुमको जजूँ।।103।।
ॐ ह्रीं महामंत्राय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यतिगण में अतिश्रेष्ठ, नाम 'महायति' आपका।
पूजत ही पद श्रेष्ठ, नेमिनाथ तुम पूजहूँ।।104।।
ॐ ह्रीं महायतये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महानाद' प्रभु आप, दिव्यध्वनी गंभीर धर।
नमत बनूँ निष्पाप, नेमिनाथ मैं नित जजूँ।।105।।
ॐ ह्रीं महानादाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्यध्वनी गंभीर, योजन तक सुनते सभी।
जजत मिले भवतीर, 'महाघोष' तुम नाम को।।106।।
ॐ ह्रीं महाघोषाय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'महेज्य' सुनाम, महती पूजा पावते।
सौ इन्द्रों से मान्य, नेमिनाथ मैं पूजहूँ।।107।।
ॐ ह्रीं महेज्याय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महसांपति' प्रभु आप, सर्व तेज के ईश हो।
नेमिनाथ भवताप, हरण करो मैं पूजहूँ।।108।।
ॐ ह्रीं महसांपतये श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

नेमिनाथ को नियम से, जपूं भक्ति चितधार।
नित्य अर्घ्य से पूजते, होऊं भवदधि पार।।1।।
ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीनेमिनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य– **ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

(तर्ज–चंदन सा बदन.......)

नेमी भगवन्! शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
कर जोड़ खड़े, तव चरण पड़े, हम शीश झुकाते चरणों में।।टेक.।।

यौवन में राजमती को वरने, चले बरात सजा करके।
पशुओं को बांधे देख प्रभो! रथ मोड़ लिया उल्टे चल के।।
लौकांतिक सुर संस्तव करके, पुष्पांजलि की तव चरणों में।।1।।

प्रभु नग्न दिगंबर मुनी बने, ध्यानामृत पी आनंद लिया।
कैवल्य सूर्य उगते धनपति ने, समवसरण भी अधर किया।।
तब राजमती आर्यिका बनी, चतुसंघ नमें तव चरणों में।।नेमी.।।2।।

वरदत्त आदि ग्यारह गणधर, अठरह हजार मुनिराज वहाँ।
राजीमति गणिनी आदिक, चालिस हजार संयतिकाएँ वहाँ।।
इक लाख सुश्रावक तीन लाख, श्राविका झुकीं तव चरणों में।।नेमी.।।3।।

सर्वाण्ह यक्ष अरु कूष्मांडिनि, यक्षी प्रभु शंख चिन्ह माना।
आयू इक सहस वर्ष चालिस, कर सहस देह उत्तम जाना।।
द्वादशगण से सब भव्य वहाँ, शत-शत वंदें तव चरणों में।।नेमी.।।4।।

प्रभु समवसरण में कमलासन पर, चतुरंगुल से अधर रहें।
चउ दिश में प्रभु का मुख दीखे, अतएव चतुर्मुख ब्रह्म कहें।।
सौ इन्द्र मिले पूजा करते, नित नमन करें तव चरणों में।।नेमी.।।5।।

प्रभु के विहार में चरण कमल, तल स्वर्ण कमल खिलते जाते।
बहुकोशों तक दुर्भिक्ष टले, षट् ऋतुज फूल फल खिल जाते।।
तनु नीलवर्ण सुंदर प्रभु को, सब वंदन करते चरणों में।।नेमी.।।6।।

तरुवर अशोक था शोकरहित, सिंहासन रत्न खचित सुंदर।
छत्रत्रय मुक्ताफल लंबित, भामंडल भवदर्शी मनहर।।
निज सात भवों को देख भव्य, प्रणमन करते तव चरणों में।। नेमी.।।7।।

सुरदुंदुभि बाजे बाज रहे, ढुरते हैं चौंसठ श्वेत चंवर।
सुरपुष्पवृष्टि नभ से बरसे, दिव्यध्वनि फैले योजन भर।।
श्रीकृष्ण तथा बलदेव आदि, अतिभक्ति लीन तव चरणों में।।नेमी.।।8।।

हे नेमिनाथ! तुम बाह्य और अभ्यंतर लक्ष्मी के पति हो।
दो मुझे अनंत चतुष्टयश्री, जो ज्ञानमती सिद्धिप्रिय हो।।
इसलिए अनंतों बार नमें, हम शीश झुकाते चरणों में।।नेमी.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिनेमिनाथजिनेन्द्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो पांच बालयति का विधान, श्रद्धा भक्ती से करते हैं।
वे त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, पाकर स्वात्मा में रमते हैं।।
देवर्षिदेव लौकांतिकसुर, होकर अंतिम भव लभते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति भास्कर हो, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

इत्याशीर्वादः।

पूजा नं. ५
श्री पार्श्वनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना –

(तर्ज-गोमटेश, जय गोमटेश मम हृदय विराजो........)

पार्श्वनाथ जय पार्श्वनाथ, मम हृदय विराजो-2
हम यही भावना भाते हैं, प्रतिक्षण ऐसी रुचि बनी रहे।
हो रसना में प्रभु नाममंत्र, पूजा में प्रीती घनी रहे।।हम0।।

हे पार्श्वनाथ प्रभु बालयति, आह्वान आपका करते हैं।
हम भक्ति आपकी कर करके, सब दुख संकट को हरते हैं।।
प्रभु ऐसी शक्ती दे दीजे, गुण कीर्तन में मति बनी रहे।।हम0।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टक –

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।
सुरगंगा का उज्ज्वल जल ले, प्रभु चरणों त्रयधार करूँ।
पुनर्जन्म का त्रास दूर हो, इसीलिए प्रभु ध्यान धरूँ।।
भव भव तृषा मिटाने वाली, पूजा जिन भगवान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

मलयागिरि का शीतल चंदन, केशर संग घिसाया है।
प्रभु के चरण कमल में चर्चत, भव संताप मिटाया है।।
तन मन को शीतल कर देती, अर्चा जिन भगवान की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
वंदे जिनवरं-4।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतम ज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

चिन्मय परमानंद आतमा, नहीं मिला इन्द्रिय सुख में।
प्रभु को अक्षत पुंज चढ़ाते, सौख्य अखंडित हो क्षण में।।
इन्द्र सभी मिल करें वंदना, प्रभु के अक्षयज्ञान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरं-4।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

रतिपति विजयी पार्श्वनाथ को, पुष्प चढ़ाऊँ भक्ती से।
निज आत्मा की सुरभि प्राप्त हो, निजगुण प्रगटे युक्ती से।।
ब्रह्मर्षीसुर स्तुति करते, चिच्चैतन्य महान की।।
।।जिनकी0।।वंदे जिनवरम्-4।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

मालपुआ रसगुल्ला बरफी, जिनवर निकट चढ़ाते ही।
नाना उदर व्याधि विघटित हो, समरस तृप्ती प्रगटे ही।।
गणधर मुनिवर भी गुण गाते, महिमा जिन भगवान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

केवलज्ञान सूर्य हो भगवन् ! मुझ अज्ञान हटा दीजे।
दीपक से मैं करूँ आरती, ज्ञान ज्योति प्रगटित कीजे।।
चक्रवर्ति भी करें वंदना, अतिशय ज्योतिर्मान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

सुरभित धूप धूपघट में मैं, खेऊँ सुरभि गगन फैले।
कर्म भस्म हो जाएं शीघ्र ही, जो हैं अशुभ अशुचि मैले।।
सम्यग्दर्शन क्षायिक होवे, मिले राह उत्थान की।।
।।जिनकी.।।वंदे जिनवरम्-4।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

अनंनास मोसम्मी नींबू, सेब संतरा फल ताजे।
प्रभु के सन्मुख अर्पण करते, मिले मोक्षफल भव भाजें।।
जिनवंदन से निजगुण प्रगटे, मिले युक्ति शिवधाम की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आवो हम सब करें अर्चना, पार्श्वनाथ भगवान की।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।

जल गंधादिक अर्घ्य सजाकर, जिनवर चरण चढ़ा करके।
केवल ''ज्ञानमती'' सुख पाकर, बसूँ मोक्ष में जा करके।।
इसी हेतु त्रिभुवन जनता भी, भक्ति करे भगवान की।।
जिनकी भक्ती से प्रगटित हो, ज्योती आतमज्ञान की।।
।।वंदे जिनवरम्-4।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

कनक भृंग में मिष्ट जल, सुरगंगा सम श्वेत।
जिनपद धारा करत ही, भवजल को जल देत।।10।।
शांतये शांतिधारा।

वकुल कमल चंपा सुरभि, पुष्पांजलि विकिरंत।
मिले निजातम संपदा, होवे भव दुःख अंत।।11।।
दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका गर्भ कल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।टेक0।।

अश्वसेन पितु वामा माता, तुमको पाकर धन्य हुए।
तिथि वैशाख वदी द्वितिया को, गर्भ बसे जगवंद्य हुए।।
प्रभु का गर्भकल्याणक पूजत, मिले निजातम सार है।।
पार्श्वनाथ.।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णाद्वितीयायां श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकरगर्भ–कल्याणकाय अर्घ्य

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका जन्मकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि उत्तम, वाराणसि में जन्म हुआ।
श्री सुमेरु की पांडुशिला पर, इन्द्रों ने जिन न्हवन किया।।
जो ऐसे जिनवर को जजते, हो जाते भव पार हैं।।
पार्श्वनाथ.।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका तपकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

पौषवदी ग्यारस जाति स्मृति, से बारह भावन भाया।
विमलाभा पालकि में प्रभु को, बिठा अश्ववन पहुँचाया।।
स्वयं प्रभू ने दीक्षा ली थी, जजत मिले भव पार है।।
पार्श्वनाथ.।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाएकादश्यां श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका ज्ञानकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

चैत्रवदी सुचतुर्थी[1] प्रातः, देवदारु तरु के नीचे।
कमठ किया उपसर्ग घोर तब, फणपति पद्मावति पहुँचे।।
जित उपसर्ग केवली प्रभु का, समवसरण हितकार है।।
पार्श्वनाथ.।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाचतुर्थ्यां श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकरकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वंदन शत शत बार है,
पार्श्वनाथ के चरण कमल में, वंदन शत शत बार है।
जिनका मोक्षकल्याणक जजते, मिले सौख्य भंडार है।।
पार्श्वनाथ.।।

श्रावण शुक्ल सप्तमी पारस, सम्मेदाचल पर तिष्ठे।
मृत्युजीत शिवकांता पायी, लोकशिखर पर जा तिष्ठे।।
सौ इन्द्रों ने पूजा करके, लिया आत्म सुखसार है।।
पार्श्वनाथ.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लासप्तम्यां श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

पार्श्वनाथ पादाब्ज को, पूजूँ बारम्बार।
पूर्ण अर्घ्य से जजत ही, पाऊँ सौख्य अपार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

---
१. उत्तरपुराण में चौदश है। कल्याणमाला पुस्तक में चतुर्थी तिथि है।

चतुर्थ वलय में अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

पार्श्वनाथ जिन बालयति, नमूँ नमूँ शत बार।
पुष्पांजलि से पूजते, भरे सौख्य भंडार।।1।।

।।अथ मण्डलस्योपरि चतुर्थवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

–सोरठा–

'महाशोकध्वज' नाम, महाशोकतरु चिन्ह है।
करूँ अनंत प्रणाम, शोक हरो हे पार्श्व जिन!।।1।।

ॐ ह्रीं महाशोकध्वजाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुत्र स्त्री मित्रादि, रहित शोक अणुमात्र ना।
नाथ! 'अशोक' सुपाद, नमत शोक दुख नाश हो।।2।।

ॐ ह्रीं अशोकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्हत् ब्रह्मा आप, 'क' प्रसिद्ध परमात्मा।
जजत हरें जन पाप, सर्वसौख्य पावें सदा।।3।।

ॐ ह्रीं काय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सृष्टा' नमूँ त्रिकाल, निंदित दुर्गति दुख लहें।
वीतराग जगपाल, पूजत जन दिव मोक्ष लें।।4।।

ॐ ह्रीं स्रष्ट्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमलासन पर नाथ, तिष्ठ 'पद्मविष्टर' बने।
नमूँ जोड़ जुग हाथ, यश सौरभ जग में भ्रमें।।5।।

ॐ ह्रीं पद्मविष्टराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी के पति देव, कहलाए 'पद्मेश' तुम।
नमते हो दुख छेव, मिले नवों निधि संपदा।।6।।

ॐ ह्रीं पद्मेशाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीविहार में देव, स्वर्णकमल सुरभित रचें।
चरण तले जिनदेव, पूजत यश सुरभी उड़े।।7।।

ॐ ह्रीं पद्मसंभूतये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाभी कमल समान, 'पद्मनाभि' कहते मुनी।
धरूँ आपका ध्यान, कमल बनाकर नाभि में।।8।।

ॐ ह्रीं पद्मनाभये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सम कोई न अन्य, नाम 'अनुत्तर' ऋषि कहें।
जजत बनें जन धन्य, सम्यग्दर्शन शुद्धि से।।9।।

ॐ ह्रीं अनुत्तराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्ष्मी हो उत्पन्न, प्रभो! आपकी भक्ति से।
'पद्मयोनि' अन्वर्थ, नमत मिले गुण संपदा।।10।।

ॐ ह्रीं पद्मयोनये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म जगत् का जन्म, हुआ आप से हे प्रभो!।।
'जगत्योनि' शुभ नाम, जजत जगत् से पार हों।।11।।

ॐ ह्रीं जगद्योनये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप से भविजन आप, प्राप्त करें रुचि मन धरें।
'इत्य' नाम निष्पाप, शरणागत मैं आपकी।।12।

ॐ ह्रीं इत्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रादिक से नित्य, स्तुति योग्य तुम्हीं प्रभो!।
त्रिभुवन में 'स्तुत्य' मैं स्तवन करूँ सदा।।13।।

ॐ ह्रीं स्तुत्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्तुति के तुम ईश, साधु 'स्तुतीश्वर' कहें।
नमूँ नमाकर शीश, गुण गाऊँ हर्षितमना।।14।।

ॐ ह्रीं स्तुतीश्वराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिगण के स्तुति योग्य, 'स्तवनार्ह' प्रसिद्ध हो।
मिले मुक्ति संयोग, जजते भेदविज्ञान हो।।15।।

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किया पंचेन्द्रिय वश्य, 'हृषीकेश' श्रुतमान्य हो।
जो जन जजें अवश्य, सौख्य अतीन्द्रिय लें भले।16।।

ॐ ह्रीं हृषीकेशाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहादिक अरिजीत, कहलाये 'जितजेय' तुम।
जो पूजें धर प्रीत, मोह हरें निर्मम बनें।17।।

ॐ ह्रीं जितजेयाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करने योग्य समस्त, क्रिया पूर्ण कर शिव गये।
वंदत चित्त प्रशस्त, 'कृतक्रिय' जजते सिद्धि हो।।18।।

ॐ ह्रीं कृतक्रियाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशगण के नाथ, समवसरण में आप ही।
मुझको करो सनाथ, जजूँ 'गणाधिप' आपको।।19।।

ॐ ह्रीं गणाधिपाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी गणों में श्रेष्ठ, श्रेष्ठ गुणाकर आप हैं।
नमूँ तुम्हें 'गणज्येष्ठ', गुणमणि को पाऊँ अबे।20।।

ॐ ह्रीं गणज्येष्ठाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में प्रभु आप, गणना करने योग्य हैं।
वंदत नशते पाप, 'गण्य' तुम्हें मैं भी जजूँ।।21।।

ॐ ह्रीं गण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सबको किया पवित्र, 'पुण्य' तुम्हें मुनिगण कहें।
मुझको करो पवित्र, पुनः पुनः याञ्चा करूँ।।22।।

ॐ ह्रीं पुण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमपथ में ले जायं, सभी भक्त को आप ही।
'गणाग्रणी' तुम पाय, वंदूं निज नेता बनूँ।।23।।

ॐ ह्रीं गणाग्रण्ये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अनंतगुणखान, साधु 'गुणाकर' कह रहे।
वंदत हों गुणवान, हो तुम गुण वर्णन करें।।24।।

ॐ ह्रीं गुणाकराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण में आप समुद्र, 'गुणाम्भोधि' हो विश्व में।
नमत बने उन्निद्र, पावें निज के गुण सभी।।25।।

ॐ ह्रीं गुणाम्भोधये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण के ज्ञाता सिद्ध, तुम 'गुणज्ञ' जगख्यात हो।
मुझ गुण सर्वप्रसिद्ध, होवेंगे तुम भक्ति से।।26।।

ॐ ह्रीं गुणज्ञाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणनायक' भगवान, तुमको जो वंदे सदा।
निजगुण से धनवान, हो जाते वे शीघ्र से।।27।।

ॐ ह्रीं गुणनायकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'गुणादरी' प्रभु सिद्ध, मैं भी गुण आदर करूँ।
पूजत हो नव निद्ध, क्रम से जिनगुण संपदा।।28।।

ॐ ह्रीं गुणादरिणे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधादिक बहुभाव, वैभाविक गुण जगत में।
नाश धरा निजभाव, नमूँ 'गुणोच्छेदी' तुम्हें।।29।।

ॐ ह्रीं गुणोच्छेदिने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब विभावगुण शून्य, 'निर्गुण' कहलाये प्रभो!।
नमत मिले गुण पूर्ण, पूजूँ मन वच काय से।।30।।

ॐ ह्रीं निर्गुणाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'पुण्यगी' सिद्ध, दिव्यध्वनी के तुम धनी।
तुम वचसुधा समृद्ध, भविजन स्वस्थ पवित्र हों।।31।।

ॐ ह्रीं पुण्यगिरे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण से सहित प्रधान, 'गुण' कहलाये शास्त्र में।
स्वात्म सुधारस पान, हेतु नमूँ प्रभु पार्श्व को।।32।।

ॐ ह्रीं गुणाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसे भय हो दूर, शरणागत के नाथ हो।
मिले ज्ञान भरपूर, नमूँ 'शरण्य' जिनेश को।।33।।

ॐ ह्रीं शरण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुण्यवाक्'[1] जिन सिद्ध पूर्वापर अविरुध वचन।
होवे चारित रिद्ध, इसी हेतु वंदन करूँ।।34।।

ॐ ह्रीं पुण्यवाचे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावकर्ममल शून्य, पूर्ण पवित्र तुम्हीं प्रभो!।
रत्नत्रय निधि पूर्ण, हेतु 'पूत' भगवन् नमूँ।।35।।

ॐ ह्रीं पूताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिरमा को आप, वरण किया भव नाश के।
प्रभु 'वरेण्य' गुरु आप, जजूँ आप सम निधि मिले।।36।।

ॐ ह्रीं वरेण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करता आत्म पवित्र, पुण्य वही है लोक में।
मुझ मन करो पवित्र, जजूँ 'पुण्यनायक' तुम्हीं।।37।।

ॐ ह्रीं पुण्यनायकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम गुणगण ना शक्य, नहीं कभी गणधर कहें।
इससे तुम्हीं 'अगण्य' जजते अगणित सौख्य हो।।38।।

ॐ ह्रीं अगण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'पुण्यधी' नाथ, शुद्ध बुद्ध ज्ञानी तुम्हीं।
नमूँ नमूँ नत माथ, शुद्ध निरंजन पद मिले।।39।।

ॐ ह्रीं पुण्यधिये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह गण के नाथ, सबके हितकारी तुम्हीं।
मिले महाव्रत सार्थ, 'गण्य'[1] तुम्हें वंदन करूँ।।40।।

ॐ ह्रीं गण्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्यतीर्थ करतार, आप 'पुण्यकृत्' सिद्ध हैं।
नमूँ अनंतों बार, एक मुक्ति के हेतु मैं।।41।।

ॐ ह्रीं पुण्यकृते श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्ग मोक्षदातार, आप 'पुण्यशासन' कहे।
मिले ज्ञान भंडार, प्रभु तुम मत की शरण है।।42।।

ॐ ह्रीं पुण्यशासनाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. 'पूतवाक्' यह पाठांतर आदिपुराण में है।

प्रभु तुम 'धर्माराम', नंदनवन सम धर्म है।
मिले स्वात्म सुखधाम, वंदन करते भव नशे।।43।।

ॐ ह्रीं धर्मारामाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहे अनंतानंत, गुण समूह भगवान् तुम।
'गुणग्राम' भगवंत, पूजत ही गुणमणि मिले।।44।।

ॐ ह्रीं गुणग्रामाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य पाप के द्वार, संवर से रोका प्रभो!।
वंदूं मैं शत बार, 'पुण्यपापरोधक' तुम्हीं।।45।।

ॐ ह्रीं पुण्यापुण्यनिरोधकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पापापेत' महान् , हिंसादिक से शून्य हो।
नमत बनूं धनवान्, संयमनिधि को पूर्ण कर।।46।।

ॐ ह्रीं पापापेताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मजन्य सुख प्राप्त, प्रभो 'विपापात्मा' नमूँ।
समकित निधि हो प्राप्त, मिले शुद्ध उपयोग झट।।47।।

ॐ ह्रीं विपापात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशत्रु को नाश, सिद्ध 'विपात्मा' हो गये।
शिवलक्ष्मी की आश, धर मन में वंदन करूँ।।48।।

ॐ ह्रीं विपात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कलिमल किया विनाश, नाथ 'वीतकल्मष' तुम्हीं।
नहिं भवसुख की आश, नमत अतीन्द्रिय सुख मिले।।49।।

ॐ ह्रीं वीतकल्मषाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जगद्वंद विभाव, परिग्रह विरहित सिद्ध हो।
प्रभु 'निर्द्वंद्व' स्वभाव, जजत कलह दुख दूर हो।।50।।

ॐ ह्रीं निर्द्वंद्वाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चित्रपदा छंद–

'निर्मद' पाश्र्व तुम्हीं हो , मान कषाय जयी हो।
वंदत हो निज संपत्, नाथ! जजूँ धर प्रीती।।51।।

ॐ ह्रीं निर्मदाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शांत' स्वभाव जिनेशा, पूर्ण शांति तुममें ही।
पूजत विपद् नशेगी, शांति अपूर्व मिलेगी।।52।।

ॐ ह्रीं शांताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप प्रभो 'निरमोही', मोह ध्वांत मुझ नाशो।
मोक्षपुरी मिल जावे, नाथ! तुम्हें मैं पूजूँ।।53।।

ॐ ह्रीं निर्मोहाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व उपद्रव नाशा, 'निरुपद्रव' कहलाये।
शोक वियोग नशेंगे, जो जजते धर भक्ती।।54।।

ॐ ह्रीं निरुपद्रवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्र पलक ना झपकें, 'निर्निमेष' भगवंता।
दर्शन करूँ तुम्हारा, नेत्र सफल हों मेरे।।55।।

ॐ ह्रीं निर्निमेषाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कवलाहार तुम्हें ना, नाथ 'निराहारी' हो।
क्षुधा तृषा की व्याधी, पूजन से नशती है।।56।।

ॐ ह्रीं निराहाराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्क्रिय' सिद्ध महंता, नंत गुणों के कंता।
पूजत हो सुख साता, स्वात्म सुधारस पाके।।57।।

ॐ ह्रीं निष्क्रियाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'निरूपप्लव' हो, बाध विकार नहीं है।
कर्म नशें सब मेरे, वंदन से सुख संपत्।।58।।

ॐ ह्रीं निरुपप्लवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'निष्कलंक' अभिरामा, शीघ्र वरी शिवरामा।
दुःख दरिद्र विनाशो, वंदत ज्ञान प्रकाशो।।59।।

ॐ ह्रीं निष्कलंकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! निरस्तैना हो, सर्व कर्म हीना हो।
मैं प्रभु अपराधी हूँ, दृष्टि कृपा की कीजे।।60।।

ॐ ह्रीं निरस्तैनसे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप नहीं अपराधी, 'निर्धूतागस' मानें।
मुझ अपराध क्षमा हो, जन्म मरण से छूटूं।।61।।
ॐ ह्रीं निर्धूतागसे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व कर्म आस्रव से, शून्य 'निरास्रव' ही हो।
आस्रव का रोधन हो, पूजत संवर प्रगटे।।62।।
ॐ ह्रीं निरास्रवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'विशाल' तुम्हीं हो, श्रेष्ठ महान जगत में।
पूजत सौख्य विशाला, ज्ञान विशाल बनेगा।।63।।
ॐ ह्रीं विशालाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलज्ञान सुज्योती, नाथ! 'विपुलज्योती' हो।
भेदविज्ञान मिलेगा, वंदन से पूजन से।।64।।
ॐ ह्रीं विपुलज्योतिषे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'अतुल' नहिं तुलना, नंत गुणों की गणना।
ज्ञान सुखामृत पाऊँ, वंदत पाप नशाऊँ।।65।।
ॐ ह्रीं अतुलाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अचिन्त्यवैभव' युत, चिंतन करते योगी।
भक्ति करें जो जन भी, बोधि समाधि लहें वो।।66।।
ॐ ह्रीं अचिन्त्यवैभवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आस्रव कर्म रुके हैं, नाथ! 'सुसंवृत' माने।
संवर मुझे मिलेगा, भक्ति सहाय बनेगी।।67।।
ॐ ह्रीं सुसंवृताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'सुगुप्तात्मा' हो, तीन गुप्तिसंयुत हो।
काय वचन मनगुप्ती, देकर देवो तृप्ती।।68।।
ॐ ह्रीं सुगुप्तात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व पदार्थ सुज्ञाता, 'सुभुत'[1] सिद्ध भगवंता।
ज्ञान हमारा पूरो, सब अज्ञान निवारो।।69।।
ॐ ह्रीं सुभुजे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. 'सुबुध' पाठांतर है टीका में।

ज्ञान नयों का सम्यक्, 'सुनयतत्त्ववित्' स्वामी।
सत्य सुनय को जानूँ, स्यात्पद जजते मुक्ती।।70।।
ॐ ह्रीं सुनयतत्त्वविदे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'एकविद्य' भगवंता, केवलज्ञान धरंता।
एक ज्ञान मुझ दीजे, कर्म कलंक हरीजे।।71।।
ॐ ह्रीं एकविद्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाविद्य' जिनदेवा, विद्या बहुत तुम्हीं में।
वंदत पाप नशेंगे, केवलबोध खिलेगा।।72।।
ॐ ह्रीं महाविद्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत् चराचर जानो, आप मुनी परधाना।
उत्तम 'मुनी' बनूं मैं, पूजत आश फलेगी।।73।।
ॐ ह्रीं मुनये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ईश्वर आप सभी के, शास्त्र 'परिवृढ' कहते।
वंदन पादकमल का, नाश करे सब विपदा।।74।।
ॐ ह्रीं परिवृढाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संसृति दुख से रक्षो, प्राणिमात्र पे करुणा।
आप 'पती' कहलाये, जग के नाथ तुम्हीं हो।।75।।
ॐ ह्रीं पतये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीश' बुद्धि के पति हो, शुद्ध करो मुझ बुद्धी।
मैं तुम पादकमल की, पूजन करूँ रुची से।।76।।
ॐ ह्रीं धीशाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'विद्यानिधि' श्रुतनिधि हो, शास्त्र स्वपर के वेत्ता।
ज्ञानगुणाम्बुधि माने, मैं रुचि से नित पूजूँ।।77।।
ॐ ह्रीं विद्यानिधये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'साक्षी' तीन भुवन के, देख लिया प्रभु साक्षात्।
वंदत केवल लक्ष्मी, भव्य करें निज कर में।।78।।
ॐ ह्रीं साक्षिणे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नम्र किया शिवपथ में, नाथ! 'विनेता' जग में।
वंदन शत शत मेरा, दूर करो भव फेरा।।79।।
ॐ ह्रीं विनेत्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधु कहे 'विहतान्तक', मृत्यु विनाश किया है।
नाश करूँ यम का मैं, स्वात्म निधी मिल जावे।।80।।
ॐ ह्रीं विहतान्तकाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुर्गति से रक्षक हो, आप 'पिता' त्रिभुवन के।
पूजन से निज लब्धी, सर्व दुःखों से मुक्ती।।81।।
ॐ ह्रीं पित्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप जगत् के गुरु हैं, नाम 'पितामह' ख्याता।
मैं गुरु तुम्हें बनाऊँ, फेर न भव में आऊँ।।82।।
ॐ ह्रीं पितामहाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शोक रोग आदिक से , 'पाता' करते रक्षा।
हे प्रभु! जिन को पाके, स्वस्थ बनूं गुण गाके।।83।।
ॐ ह्रीं पात्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'पवित्र' तुम्हीं हो, पावन करते प्राणी।
पावन हो मुझ आत्मा, पूजन से फल प्राप्ती।।84।।
ॐ ह्रीं पवित्राय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पावन' सिद्ध कहाये, वंदत सौख्य बढ़ायें।
हो मन पावन मेरा, काय वचन भी शुचि हों।।85।।
ॐ ह्रीं पावनाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'गती' हैं जग में, आर्त दूर कर देते।
ज्ञानमात्र हो स्वामी, पूजत पंचमगति हो।।86।।
ॐ ह्रीं गतये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जनों के 'त्राता', क्त इसी से जजते।
काय वचन मन से मैं, ध्यान धरूँ प्रभु तेरा।।87।।
ॐ ह्रीं त्रात्रे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'भिषग्वर' तुम ही, पूर्ण स्वस्थ कर देते।
जन्म मरण रोगों से, भक्त छुटें निश्चित ही।।88।।
ॐ ह्रीं भिषग्वराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्तिरमा को वर के, 'वर्य' कहाए जग में।
इंद्रगणों से वेष्टित, मैं नत हूँ श्रीपद में।।89।।
ॐ ह्रीं वर्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इच्छित फल देते हो, नाथ 'वरद' कहलाये।
बोधि समाधि मुझे दो, एक यही वर मांगूँ।।90।।
ॐ ह्रीं वरदाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पालन पोषण कर्ता, आप 'परम' भव्यों के।
इष्ट फलों को देकर, पूजन का फल मिलता।।91।।
ॐ ह्रीं परमाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा पावन कर, आप 'पुमान' कहाये।
भाक्तिकजन मन शुद्धी, वंदन से झट होती।।92।।
ॐ ह्रीं पुंसे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अधर्म निरूपा, नाथ 'कवी' मुनि गायें।
मैं तुम गुण गा गाके, सफल करूँ निज रसना।।93।।
ॐ ह्रीं कवये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध 'पुराणपुरुष' हो, आदि अंत नहिं होता।
प्रभु पुरुषार्थ करूँ मैं, मोक्ष मिले अर्चन से।।94।।
ॐ ह्रीं पुराणपुरुषाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्षीयान्' गुणों से, अतिशय वृद्ध कहाये।
स्वात्मगुणों की वृद्धी, हो मुझ में यह मांगूँ।।95।।
ॐ ह्रीं वर्षीयसे श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'ऋषभ' माने हो, पूर्ण जगत् को जानो।
श्रेष्ठ ज्ञान गुण दीजे, मोह अंधेर हरीजे।।96।।
ॐ ह्रीं ऋषभाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'पुरु' महान भगवंता, वंदन करूँ तुम्हारा।
दान अभय का दीजे, दूर करो भव फेरा।।97।।

ॐ ह्रीं पुरवे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'प्रतिष्ठाप्रभवा', उत्पत्ती तुमसे ही।
सुस्थिरता प्रगटेगी, वंदन करूँ सदा मैं।।98।।

ॐ ह्रीं प्रतिष्ठाप्रसवाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'हेतु' तुम्हीं हो जग में, भुक्ति मुक्तिप्रद माने।
रत्नत्रय निधि दीजे, वंदत सुख संपत् हो।।99।।

ॐ ह्रीं हेतवे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप एक त्रिभुवन के, कहे पितामह स्वामी।
एकमात्र गुरु माने, पूजत ही भव हानें।।100।।

ॐ ह्रीं भुवनैकपितामहाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाध्वरधर' प्रभु पारस विभो।
महाउपसर्ग विजयी नमूं आपको।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।101।।

ॐ ह्रीं महाध्वरधराय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विणी छंद–

'धुर्य' हो मुक्ति के मार्ग में श्रेष्ठ हो।
कमठ को जीत के सर्व में ज्येष्ठ हो।।
आपके नाम मे मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।102।।

ॐ ह्रीं धुर्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महौदार्य' अतिशायि ऊदार हो।
आप निर्ग्रन्थ भी इष्ट दातार हो।।

आपके नाम मे मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।103।।

ॐ ह्रीं महौदार्याय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य वाक्याधिपति सु 'महिष्ठवाक्' हो।
दिव्यवाणी सुधावृष्टि कर्ता सु हो।।
आपके नाम मे मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।104।।

ॐ ह्रीं महिष्ठवाचे श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोक आलोक व्यापी 'महात्मा' तुम्हीं।
अंतरात्मा पुनः सिद्ध आत्मा तुम्हीं।।
आपके नाम मे मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।105।।

ॐ ह्रीं महात्मने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व तेजोमयी 'महसांधाम' हो।
आत्म के तेज से पार्श्व प्रभु मान्य हो।।
आपके नाम मे मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।106।।

ॐ ह्रीं महासांधाम्ने श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व ऋषि में प्रमुख हो 'महर्षि' तुम्हीं।
ऋद्धि सिद्धी धरो आप सुख ही मही।।
आपके नाम मे मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।107।।

ॐ ह्रीं महर्षये श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ भव धारके आप 'महितोदया'।
पार्श्व जिन नाम से पूज्य धर्मोदया।।
आपके नाम मे मंत्र को मैं जजूँ।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूँ।।108।।

ॐ ह्रीं महितोदयाय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्यं–

पार्श्वनाथ प्रभु बालयति, हैं जग के आधार।
पूर्ण अर्घ्यं से मैं जजूं, हो जाऊं भव पार।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

(शंभु छंद-तर्ज-चंदन सा वदन..........)

जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आये हैं।
जय जय प्रभु के श्रीचरणों में, हम शीश झुकाने आये हैं।।टेक.।।

नाना महिपाल तपस्वी बन, पंचाग्नी तप कर रहा जभी।
प्रभु पार्श्वनाथ को देख क्रोधवश, लकड़ी फरसे से काटी।।
तब सर्प युगल उपदेश सुना, मर कर सुर पद को पाये हैं।।जय.।।1।।

यह सर्प सर्पिणी धरणीपति, पद्मावति यक्षी हुए अहो।
नाना मर शंबर ज्योतिष सुर, समकित बिन ऐसी गती अहो।।
नहिं ब्याह किया प्रभु दीक्षा ली, सुर नर पशु भी हर्षाये हैं।।जय.।।2।।

प्रभु अश्वबाग में ध्यान लीन, कमठासुर शंवर आ पहुँचा।
क्रोधित हो सात दिनों तक बहु, उपसर्ग किया पत्थर वर्षा।।
प्रभु स्वात्म ध्यान में अविचल थे, आसन कंपते सुर आये हैं।।जय.।।3।।

धरणेंद्र व पद्मावति ने फण पर, लेकर प्रभु की भक्ती की।
रवि केवलज्ञान उगा तत्क्षण, सुर समवसरण की रचना की।।
अहिच्छत्र नाम से तीर्थ बना, अगणित सुरगण हर्षाए हैं।।जय.।।4।।

यह देख कमठचर शत्रू भी, सम्यक्त्वी बन प्रभु भक्त बने।
मुनिनाथ स्वयंभू आदिक दश, गणधर थे ऋद्धीवंत घने।।
सोलह हजार मुनिराज प्रभू के, चरणों में शिर नाये हैं।।जय.।।5।।

गणिनी सुलोचना प्रमुख आर्यिका, छत्तिस सहस धर्मरत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकायें, त्रय लाख वहाँ जिन भाक्तिक थीं।।
प्रभु सर्प चिन्ह तनु हरित वर्ण, लखकर रवि शशि शर्माये हैं।।जय.।।6।।

नव हाथ तुंग सौ वर्ष आयु, प्रभु उग्र वंश के भास्कर हो।
उपसर्गजयी संकटमोचन, भक्तों के हित करुणाकर हो।।
प्रभु महासहिष्णू क्षमासिंधु, हम भक्ती करने आये हैं।।जय.।।7।।

चौंतिस अतिशय के स्वामी हो, वर प्रातिहार्य हैं आठ कहे।
आनन्त्य चतुष्टय गुण छ्यालिस, फिर भी सब गुण आनन्त्यकहे।।
बस केवल 'ज्ञानमती' हेतू, प्रभु तुम गुण गाने आये हैं।।
जय पार्श्व प्रभो! करुणासिंधो! हम शरण तुम्हारी आयेहैं।।जय.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिपार्श्वनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद –

जो पांच बालयति का विधान, श्रद्धा भक्ती से करते हैं।
वे त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, पाकर स्वात्मा में रमते हैं।।
देवर्षिदेव लौकांतिकसुर, होकर अंतिम भव लभते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति भास्कर हो, त्रिभुवन आलोकित करते हैं॥

।।इत्याशीर्वादः।।

पूजा नं. ६
श्री महावीर जिनपूजा

(तर्ज-तुमसे लागी लगन......)

आपके श्रीचरण, हम करें नित नमन, शरण दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।टेक.।।
वीर सन्मति महावीर भगवन् !
बालयति हे अतिवीर! श्रीमन्!
आप पूजा करें, शुद्ध समकित धरें, शक्ति दीजे।
नाथ! मुझपे कृपा दृष्टि कीजे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक –

(तर्ज-चंदन सा बदन.......)

–शंभु छंद –

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
गंगानदि का शुचि जल लेकर, तुम चरण चढ़ाने आये हैं।
भव भव का कलिमल धोने को,श्रद्धा से अति हरषाये हैं।।
हे वीरप्रभो! महावीर प्रभो! त्रयधारा दें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।

हरिचंदन कुंकुम गंध लिये, जिनचरण चढ़ाने आये हैं।
मोहारिताप संतप्त हृदय, प्रभु शीतल करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! चंदन लेकर, चर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन.........।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
क्षीराम्बुधि फेन सदृश उज्ज्वल, अक्षत धोकर ले आये हैं।
क्षय विरहित अक्षय सुख हेतू, प्रभु पुंज चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! हम पुंज चढ़ा, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
बेला चंपक अरविंद कुमुद, सुरभित पुष्पों को लाये हैं।
मदनारिजयी तव चरणों में, हम अर्पण करने आये हैं।।
हे वीरप्रभो! पुष्पों को ले, पूजा करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
पूरणपोली खाजा गूझा, मोदक आदिक बहु लाये हैं।
निज आतम अनुभव अमृत हित, नैवेद्य चढ़ाने आये हैं।
हे वीरप्रभो! चरु अर्पण कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
मणिमय दीपक में ज्योति जले, सब अंधकार क्षण में नाशे।
दीपक से पूजा करते ही, सज्ज्ञानज्योति निज में भासे।।
हे वीरप्रभो! तुम आरति कर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
दशगंध विमिश्रित धूप सुरभि, धूपायन में खेते क्षण ही।
कटु कर्म दहन हो जाते हैं, मिलता समरस सुख तत्क्षण ही।।
हे वीर प्रभो! हम धूप जला, अर्चन करते तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
एला केला अंगूरों के, गुच्छे अति सरस मधुर लाये।
परमानंदामृत चखने हित, फल से पूजन कर हर्षाये।।
हे वीर प्रभो! महावीर प्रभो! हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशलानंदन, शत शत वंदन, शत शत वंदन तव चरणों में।
हम भक्तिभाव से अंजलि कर, प्रभु शीश झुकाते चरणों में।।
जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल लाये हैं।
निजगुण अनंत की प्राप्ति हेतु, प्रभु अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।।
''सज्ज्ञानमती'' सिद्धी देकर, हम नमन करें तव चरणों में।।
त्रिशलानंदन..........।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपेंद्रवज्रा छंद –

त्रैलोक्य शांती कर शांतिधारा, श्री सन्मती के पदकंज धारा।
निज स्वांत शांतीहित शांतिधारा, करते मिले है भवदधि किनारा।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरकल्पतरु के वर पुष्प लाऊँ, पुष्पांजलि कर निज सौख्य पाऊँ।
संपूर्ण व्याधी भय को भगाऊँ, शोकादि हर के सब सिद्धि पाऊँ।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद –

सिद्धार्थ नृप कुण्डलपुरी में, राज्य संचालन करें।
त्रिशला महारानी प्रिया सह, पुण्य संपादन करें।।
आषाढ़ शुक्ला छठ तिथी, प्रभु गर्भ मंगल सुर करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, हर विघ्न सब मंगल भरें।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्लाषष्ठ्यां श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित चैत्र तेरस के प्रभू, अवतीर्ण भूतल पर हुए।
घंटादि बाजे बज उठे, सुरपति मुकुट भी झुक गये।।
सुरशैल पर प्रभु जन्म उत्सव, हेतु सुरगण चल पड़े।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, निजकर्म धूली झड़ पड़े।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्लात्रयोदश्यां श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर वदी दशमी तिथी, भवभोग से निःस्पृह हुए।
लौकांतिकादी आनकर, संस्तुति करें प्रमुदित हुए।।
सुरपति प्रभू की निष्क्रमण, विधि में महा उत्सव करें।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, संसार सागर से तरें।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु ने प्रथम आहार राजा, कूल के घर में लिया।
वैशाख सुदि दशमी तिथी, केवलरमा परिणय किया।।
श्रावण वदी एकम तिथी, गौतम मुनी गणधर बनें।
तब दिव्यध्वनि प्रभु की खिरी, हम पूजते हर्षित तुम्हें।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्लादशम्यां श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकरकेवलज्ञान-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक अमावस पुण्य तिथि, प्रत्यूष बेला में प्रभो।
पावापुरी उद्यान सरवर, बीच में तिष्ठे विभो।।
निर्वाणलक्ष्मी वरण कर, लोकाग्र में जाके बसे।
हम पूजते वसु अर्घ्य ले, तुम पास में आके बसें।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णाअमावस्यायां श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकरनिर्वाण-कल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–गीता छंद –

महावीर सन्मति प्रभो! शिवसुखफल दातार।
पूर्ण अर्घ्य अर्पण करूँ, नमूँ अनंतों बार।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचम वलय में अथ 108 अर्घ्य

–दोहा–

महावीर प्रभु बालयति, नमूं नमूं शत बार।
पुष्पांजलि से पूजते, पाऊं सौख्य अपार।।

।।अथ मंडलस्योपरि पंचमवलये पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

'श्रीवृक्षलक्षण' प्रभो! तरु अशोक से सिद्ध।
शोक हरण हे वीर जिन! नमत मिले नव निद्धि।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीवृक्षलक्षणाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनंत लक्ष्मी से तुम्हीं, आलिंगित हो 'श्लक्षण'।
गुण अनंत मेरे सभी, मिलते नाथ! प्रसन्न।।2।।

ॐ ह्रीं श्लक्षणाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ महा व्याकरण में, साधु कुशल लक्षण्य।
वाङ्मय विद्या प्राप्त हो, नमत जन्म हो धन्य।।3।।

ॐ ह्रीं लक्षण्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार सुआठ हैं, लक्षण श्रुत में मान्य।
'शुभलक्षण' इनसे सहित, नमत मिले गुण साम्य।।4।।

ॐ ह्रीं शुभलक्षणाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय सुख अरु ज्ञान से, रहित 'निरक्ष' जिनेश।
सौख्य अतीन्द्रिय हेतु मैं, नमत हरूँ भव क्लेश।।5।।

ॐ ह्रीं निरक्षाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल सदृश वर नेत्र हैं, अतः 'पुण्डरीकाक्ष'।
पूजत मन पंकज खिले, वीर! भक्ति है साक्षि।।6।।

ॐ ह्रीं पुण्डरीकाक्षाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्म गुणों की पुष्टि से, 'पुष्कल' पूर्ण महान्।
नमत मिले सुख वीर जिन, भक्त बनें भगवान्।।7।।

ॐ ह्रीं पुष्कलाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खिले सुरोरुह नेत्र हैं, करिये दृष्टि प्रसन्न।
नमूँ 'पुष्करेक्षण' तुम्हें, मुझ मन होय प्रसन्न।।8।।

ॐ ह्रीं पुष्करेक्षणाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वात्मा की उपलब्धि हो, तुम भक्ती से नाथ!।
वंदूं 'सिद्धिद' वीर को, भव भव में हो नाथ।।9।।

ॐ ह्रीं सिद्धिदाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धोऽहं संकल्प से, तुम्हीं 'सिद्धसंकल्प'।
तुम अर्चा से दूर हों, सब संकल्प विकल्प।।10।।

ॐ ह्रीं सिद्धसंकल्पाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सिद्धात्मा' भगवान को, नमते जो त्रयकाल।
स्वयं सिद्ध बन वे पुरुष, बनते जग प्रतिपाल।।11।।
ॐ ह्रीं सिद्धात्मने श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप 'सिद्धसाधन' प्रभो! भव्य मुक्ति के हेतु।
निश्चय रत्नत्रय निमित, मिलें आप भवसेतु।।12।।
ॐ ह्रीं सिद्धसाधनाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'बुद्धबोध्य' भगवंत तुम नमूँ नमूँ धर प्रीति।
ज्ञान जानने योग्य ही, प्राप्त किया जग मीत।।13।।
ॐ ह्रीं बुद्धबोध्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाबोधि' वैराग्य है, अरु रत्नत्रय प्राप्ति।
अति दुर्लभ इस विश्व में, नमत मुझे हो प्राप्ति।।14।।
ॐ ह्रीं महाबोधये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वर्धमान' विज्ञान से, वृद्धिंगत भगवंत।
ज्ञानपूर्ण मेरा करो, नमूँ तुम्हें शिवकांत।।15।।
ॐ ह्रीं वर्धमानाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय ऋद्धि समेत प्रभु, नाम 'महर्द्धिक' सिद्ध।
सर्व ऋद्धि सिद्धी मिले, यश भी जगत प्रसिद्ध।।16।।
ॐ ह्रीं महर्द्धिकाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा कल्प व व्याकरण, निरुक्त ज्योतिष छन्द।
वेद अंगमय को नमूँ, शिव उपाय 'वेदांग'।।17।।
ॐ ह्रीं वेदांगाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा पृथक शरीर से, यही भेद विज्ञान।
नमूँ 'वेदवित्' आपसे, मिले मुझे सज्ज्ञान।।18।।
ॐ ह्रीं वेदविदे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ 'वेद्य' मुनिगम्य तुम, केवलज्ञान धरंत।
स्वसंवेद्य अनुभव मिले, नमूँ वीर भगवंत।।19।।
ॐ ह्रीं वेद्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जातरूप' जिनदेव तुम, निर्विकार निर्ग्रंथ।
नग्न दिगम्बर वेषयुत, नमत मिले शिवपंथ।।20।।
ॐ ह्रीं जातरूपाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउ ज्ञानी विद्वन् मुनी, उनमें श्रेष्ठ जिनेंद्र।
नाम 'विदांवर' मैं नमूँ, मिले ध्यान का केन्द्र।।21।
ॐ ह्रीं विदांवराय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'वेदवेद्य' प्रभु आप ही, द्वादशांग के ईश।
पूर्ण ज्ञान दीजे मुझे, नमूँ नमाकर शीश।।22।।
ॐ ह्रीं वेदवेद्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मा से ज्ञेय तुम, 'स्वसंवेद्य' भगवान्।
निज समरस सुख हेतु मैं, नमूँ नमूँ गुणखान।।23।।
ॐ ह्रीं स्वसंवेद्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वेद चार तुमसे हुये, अरु विशिष्ट ज्ञानैक।
नमूँ 'विवेद' जिनेन्द्र को, पाऊँ निज सुख एक।।24।।
ॐ ह्रीं विवेदाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तार्किकजन में श्रेष्ठ तुम, 'वदताम्वर' जिनराज।
न्याय तर्क विद्या निपुण, बनूँ सरें सब काज।।25।।
ॐ ह्रीं वदताम्वराय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाथ! 'अनादी निधन' हो, जन्म मरण से शून्य।
श्री अनंत शाश्वत धरो, नमत बनूँ दुख शून्य।।26।।
ॐ ह्रीं अनादिनिधनाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्थ प्रगट करते प्रभो! केवलज्ञान से आप।
'व्यक्त' नाम तुमको नमूँ, दूर करूँ यम ताप।।27।।
ॐ ह्रीं व्यक्ताय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अठरह महभाषा लघू, सात शतक सुस्पष्ट।
दिव्यध्वनी खिरती नमूँ, 'व्यक्तवाक्' तुम इष्ट।।28।।
ॐ ह्रीं व्यक्तवाचे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमूँ 'व्यक्तशासन' विमल, मत विरोध से हीन।
सब प्रमाण से प्रगट है, इससे हो दुख क्षीण।।29।।
ॐ ह्रीं व्यक्तशासनाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'युगादिकृत' आपने, धर्मसृष्टि उपदेश।
जग को संरक्षण दिया, नमत न हो दुख लेश।।30।।
ॐ ह्रीं युगादिकृते श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण कृष्णा प्रतिपदा, दिव्यध्वनि के नाथ।
'युगाधार' तुमको नमूँ, धर्मतीर्थ से सार्थ।।31।।
ॐ ह्रीं युगाधाराय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'युगादि' कृतयुग का प्रथम, धर्म वही उपदेश।
शिवपथ दिखलाया अभी, सिद्ध नमूँ सुख हेतु।।32।।
ॐ ह्रीं युगादये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'जगदादिज' जग में प्रभो! तीर्थंक अवतार।
मोक्षमार्ग के हेतु मैं, नमूँ अनंतों बार।।33।।
ॐ ह्रीं जगदादिजाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय स्वामी इन्द्र से, बढ़कर आप 'अतीन्द्र'।
शत इन्द्रों से वंद्य प्रभु, नमत बनूँ ज्ञानीन्द्र।।34।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्राय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय ज्ञान व सुख रहित, आप 'अतीन्द्रिय' नाम।
स्वात्म अतीन्द्रिय सौख्य हित, कोटि कोटि प्रणाम।।35।
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'धीन्द्र' सुकेवलज्ञान से, परमात्मा अभिराम।
नमूँ भक्ति से शीघ्र मुझ, मिले स्वात्म विश्राम।।36।।
ॐ ह्रीं धीन्द्राय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमैश्वर्य समेत प्रभु, नाम 'महेन्द्र' धरंत।
पूजूँ श्रद्धा से तुम्हें, अनुपम सुख विलसंत।।37।।
ॐ ह्रीं महेन्द्राय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूक्ष्म अंतरित दूर की, वस्तु अतीन्द्रिय सर्व।
'अतीन्द्रियार्थदृक्' देखते, नमत मिले गुण सर्व।।38।।
ॐ ह्रीं अतीन्द्रियार्थदृशे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पांचों इन्द्रिय से रहित, आप 'अनिन्द्रिय' मान।
अशरीरी महावीर को, नमत मिले सुख साम्य।।39।।
ॐ ह्रीं अनिन्द्रियाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहमिंद्रों से पूज्य हो, 'अहमिन्द्रार्च्य' जिनेश।
स्वात्म सौख्य संपति मिले, शीघ्र मिटे भव क्लेश।।40।।
ॐ ह्रीं अहमिन्द्राच्यार्य श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बत्तिस इन्द्रों से महित, नाम 'महेन्द्रमहीत'।
मैं भी पूजूँ प्रीतिधर, मिले स्वात्म नवनीत।।41।।
ॐ ह्रीं महेन्द्रमहिताय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पूजा के योग्य तुम, जग में श्रेष्ठ 'महान्'।
महाव्रतों की प्राप्ति हो, अतः नमूँ भगवान्।।42।।
ॐ ह्रीं महते श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'उद्भव' भव उत्कृष्ट तुम, या जग में उत्कृष्ट।
पूजन से सब भक्त के, मिट जाते सब कष्ट।।43।।
ॐ ह्रीं उद्भवाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्मसृष्टि के बीज हो, 'कारण' नाम धरंत।
धर्मनिधी मुझको मिले, आतम सुख विलसंत।।44।।
ॐ ह्रीं कारणाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौथे काल के अंत में, उपदेशा षट्कर्म।
'कर्ता' कहलाये प्रभो! नमत मिटे भव भर्म।।45।।
ॐ ह्रीं कर्त्रे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचमहा संसार से, पार हुये भगवंत।
'पारग' तुमको मुनि कहें, तारो मुझे तुरंत।।46।।
ॐ ह्रीं पारगाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्गती भव दुःख से, तारक नाव समान।
'भवतारक' की शरण ले, तिरते भव्य प्रधान।।47।।
ॐ ह्रीं भवतारकाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण अनंत का पार नहिं, पा सकते गणईश।
नमूँ 'अगाह्य' प्रभो तुम्हें, नित्य नमाकर शीश।।48।।
ॐ ह्रीं अगाह्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगीजन से भी 'गहन', आप अलक्ष्यस्वरूप।
स्वात्म गुणों के हित नमूँ, प्राप्त करूँ निज रूप।।49।।
ॐ ह्रीं गहनाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

योगगम्य योगीश के, 'गुह्य' आपका नाम।
मुक्ति रहस्य मिले मुझे, नमूँ नमूँ शिवधाम।।50।।
ॐ ह्रीं गुह्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रमणी छंद–

भगवन्! 'परार्घ्य' सुख ऋद्धि धरा।
मुझको सुख दो, कर जोड़ नमूँ।।51।।
ॐ ह्रीं परार्घ्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'परमेश्वर' हो, शिव श्रीपति हो।
नमते मुझको, परमामृत दो।।52।।
ॐ ह्रीं परमेश्वराय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अनंतर्द्धी' जग में।
मुझमें अनंत गुण ऋद्धि भरो।।53।।
ॐ ह्रीं अनंतर्द्धये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहिं माप 'अमेयर्द्धी' गुण तुम।
सुख ज्ञान भरो, मुझमें जजहूँ।।54।।
ॐ ह्रीं अमेयर्द्धये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु आप 'अचिन्त्यर्द्धी' नत मैं।
नहिं चिंतन कर सकते मुनि भी।।55।।
ॐ ह्रीं अचिन्त्यर्द्धये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रणमूं 'समग्रधी' केवल धी।
जजते मिलती, निज सौख्य निधी।।56।।
ॐ ह्रीं समग्रधियै श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राग्र्य' नमूँ, जग मुख्य तुम्हीं।
मुझ जन्म जरा, मरणादि हरो।।57।।
ॐ ह्रीं प्राग्र्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु 'प्राग्रहरा', सब मंगल कृत।
नमते मुझको, निज संपति दो।।58।।
ॐ ह्रीं प्राग्रहराय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'अभ्यग्र' तुम्हीं, शिव सन्मुख हो।
त्रयलोक उपरि, निवसो प्रणमूँ।।59।।
ॐ ह्रीं अभ्यग्राय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'प्रत्यग्र' विलक्षण हो जग में।
नत हूँ नित मैं, चरणांबुज में।।60।।
ॐ ह्रीं प्रत्यग्राय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब में प्रमुखा, प्रभु 'अग्र्य' तुम्हीं।
तुमको जजते, शत इन्द्र सदा।।61।।
ॐ ह्रीं अग्र्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब में अग्रेसर 'अग्रिम' हो।
प्रभु अंत समाधी, दो मुझको।।62।।
ॐ ह्रीं अग्रिमाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–उपजाति छंद–

हो ज्येष्ठ सबमें, 'अग्रज' कहाते।
त्रैलोक्य में नाथ, तुम्हीं बड़े हो।।
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।63।।

ॐ ह्रीं अग्रजाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महातपा' घोर सुतप किया है।
बारह तपों को मुझको भि देवो।।पूजूँ.।।64।।

ॐ ह्रीं महातपसे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तजोमयी पुण्य प्रभो! धरे हो।
'महासुतेजा' तुम तेज फैला।।पूजूँ.।।65।।

ॐ ह्रीं महातेजसे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महोदर्क' तुम्हें कहे हैं।
महान तप का फल श्रेष्ठ पाया।।पूजूँ.।।66।।

ॐ ह्रीं महोदर्काय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऐश्वर्य भारी प्रभु आपका है।
अतः 'महोदय' जग में तुम्हीं हो।।पूजूँ.।।67।।

ॐ ह्रीं महोदयाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कीर्ती चहूँदिश प्रभु की सुफैली।
'महायशा' नाम कहा इसी से।।पूजूँ.।।68।।

ॐ ह्रीं महायशसे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधाम' तुम्हीं कहाते।
विशाल ज्ञानी सुप्रताप धारी।।पूजूँ.।।69।।

ॐ ह्रीं महाधाम्ने श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासत्त्व' अपार शक्ती।
हे नाथ! मुझको निज शक्ति देवो।।पूजूँ.।।70।।

ॐ ह्रीं महासत्त्वाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाधृती' धैर्य असीम धारी।
आपत्ति में धैर्य रहे मुझे भी।।
पूजूँ तुम्हें नाम सुमंत्र गाऊँ।
स्वात्मैक सिद्धी प्रभु शीघ्र पाऊँ।।71।।

ॐ ह्रीं महाधृतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महाधैर्य' त्रिलोक में भी।
महान तेजोबल वीर्यशाली।।पूजूँ.।।72।।

ॐ ह्रीं महाधैर्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महावीर्य' अनंतशक्ती।
महान तेजोबल वीर्यशाली।।पूजूँ.।।73।।

ॐ ह्रीं महावीर्याय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो! 'महासंपत्' सर्वसंपत्।
समोसरण में तुम पास शोभे।।पूजूँ.।।74।।

ॐ ह्रीं महासंपदे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभो!'महाबल' तनु शक्ति भारी।
ऐसी जगत् में नहिं अन्य के हो।।पूजँ.।।75।।

ॐ ह्रीं महाबलाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–प्रमाणिक छंद–

'महानशक्ति' धारते, त्रिलोक के गुरू तुम्हीं।
नमूँ अनंत शक्ति हेतु, आपको सदा यहीं।।76।।

ॐ ह्रीं महाशक्तये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान ज्योति' नाथ हो, अनंत ज्ञान रूप हो।
सुज्ञान ज्योति दीजिये, जजूँ तुम्हें सुप्रीति से।।77।।

ॐ ह्रीं महाज्योतिषे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाविभूति तीन लोक की अनंत संपदा।
तथापि हो अधर तुम्हीं, नमूँ निजात्म सौख्य दो।।78।।

ॐ ह्रीं महाविभूतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाद्युती' असंख्य रत्नकांति से भि कांत हो।
जजूँ तुम्हें स्वकांति से मुझे प्रकाश दीजिये।।79।।
ॐ ह्रीं महाद्युतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महामती' महान पूर्ण बुद्धि से त्रिलोक को।
जिनेन्द्र! एक साथ आप जानते नमूँ तुम्हें।।80।।
ॐ ह्रीं महामतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महाननीति' न्याय आप सर्व भव्य का करें।
समस्त दुष्ट कर्म से छुड़ाइये जजूँ तुम्हें।।81।।
ॐ ह्रीं महानीतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महान क्षांति' शत्रु पे क्षमा किया क्षमामयी।
मुझे भि शक्ति दीजिये क्षमास्वरूप मैं बनूँ।।82।।
ॐ ह्रीं महाक्षांतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महादयो' समस्त जीव पे दया किया तुम्हीं।
दया करूँ निजात्म पे यही कृपा करो नमूँ।।83।।
ॐ ह्रीं महादयाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महानप्राज्ञ' नाथ केवली अनंतज्ञान से।
सुभेदज्ञान दीजिये तिरूँ भवोदधी अबे।।84।।
ॐ ह्रीं महाप्राज्ञाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महान भाग' सर्व सौख्य पूर्ण हो त्रिलोक में।
सुरेन्द्र पूजते तुम्हें नमंत श्रेष्ठ भाग्य हो।।85।।
ॐ ह्रीं महाभागाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महाअनंद' स्वात्मजन्य सौख्य में निमग्न हो।
मुझे निजात्म सौख्य दीजिये नमूँ नमूँ तुम्हें।।86।।
ॐ ह्रीं महानन्दाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महाकवी' समस्त सौख्यदायि आपके वचन।
नमूँ कृपा करो सुवाक्य सिद्धि प्राप्त हो मुझे।।87।।
ॐ ह्रीं महाकवये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महामहान्' देव इंद्र आप अर्चना करें।
महान तेज धारते नमूँ सुज्ञान तेज दो।।88।।
ॐ ह्रीं महामहाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महानकीर्ति' से समस्त लोक में सुव्याप्त हो।
पदाब्ज को जजूँ निजात्म कीर्ति व्याप्त हो यहाँ।।89।।
ॐ ह्रीं महाकीर्तये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महान कांति' से अपूर्व कांतिमान हो तुम्हीं।
समस्त आधि व्याधि नाश स्वस्थ कीजिये जजूँ।।90।।
ॐ ह्रीं महाकान्तये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महावपू' असंख्य भी, प्रदेश व्याप्त लोक में।
सुकेवली समुद्सुघात से तुम्हें नमूँ यहीं।।91।।
ॐ ह्रीं महावपुषे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महान दान' अभय दान सर्वप्राणि को दिया।
प्रभो हमें उबारिये कृपालु रक्षिये जजूँ।।92।।
ॐ ह्रीं महादानाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महान ज्ञान' से अलोक लोक जानते सदा।
सुज्ञान की कली खिले जजूँ इसीलिये तुम्हें।।93।।
ॐ ह्रीं महाज्ञानाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महान योग' नाम है स्वशुद्ध आत्मध्यान से।
अनंत धाम पा लिया नमूँ निजात्म ध्यान दो।।94।।
ॐ ह्रीं महायोगाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
'महागुणी' अनंत गुण समेत इन्द्रवंद्य हो।
गुणों की राशि दीजिये समस्त दोष दूर हों।।95।।
ॐ ह्रीं महागुणाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सुमेरु पे न्हवन करें सुरेंद्र वंद्य भक्ति से।
'महान महपती' नमूँ दरिद्र दुख दूर हो।।96।।
ॐ ह्रीं महामहपतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'सुप्राप्त महापंचकल्याणक' सुरेन्द्र वृंद से।
जिनेन्द्र एक ही कल्याण दीजिये नमूँ तुम्हें।।97।।

ॐ ह्रीं प्राप्तमहापंचकल्याणकाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महाप्रभु' समस्त जीव के अपूर्व नाथ हा।
निवारिये समस्त मोह दुःखदायि मैं जजूँ।।98।।

ॐ ह्रीं महाप्रभवे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महान प्रातिहार्य के अधीश' छत्र आदि से।
शतेन्द्र वंद्य आपको नमूँ अपूर्व सौख्य दो।।99।।

ॐ ह्रीं महाप्रातिहार्याधीशाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'महेश्वरा' त्रिलोक के अधीश्वरा जिनेश्वरा।
सुभक्ति से नमूँ तुम्हें महान संपदा मिले।।100।।

ॐ ह्रीं महेश्वराय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–स्रग्विनी छन्द–

भो 'महाक्लेशअंकुश' परीषहजयी।
क्लेश के नाशने वीर मृत्युंजयी।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूं।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूं।।101।।

ॐ ह्रीं महाक्लेशांकुशाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

'शूर' हो कर्मक्षय दक्ष हो लोक में।
नाथ! मेरे हरो कर्म आनंद हो।।आप.।।102।।

ॐ ह्रीं शूराय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाभूतपति' गणधराधीश हो।
वीर! रक्षा करो आप जगदीश हो।।आप.।।103।।

ॐ ह्रीं महाभूतपतये श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आप ही हो 'गुरू' धर्म उपदेश दो।
तीन जग में तुम्हीं श्रेष्ठ हो सौख्य दो।।
आपके नाम के मंत्र को मैं जजूं।
ज्ञान आनंद पीयूष को मैं चखूं।।104।।

ॐ ह्रीं गुरवे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर ही हो 'महापराक्रम' के धनी।
केवलज्ञान से सर्ववस्तू भणी।।आप.।।105।।

ॐ ह्रीं महापराक्रमाय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो 'अनंत' आपका अंत ना हो कभी।
वीर! दीजे अनंतों गुणों को अभी।।आप.।।106।।

ॐ ह्रीं अनन्ताय श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हे 'महाक्रोधरिपु' क्रोध शत्रू हना।
सर्व दोषारि नाशा सुमृत्यू हना।।आप.।।107।।

ॐ ह्रीं महाक्रोधरिपवे श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर इंद्रिय 'वशी' लोक तुम वश्य में।
आत्मवश मैं बनूँ चित्त को रोक के।।आप.।।108।।

ॐ ह्रीं वशिने श्रीमहावीरस्वामिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

वर्धमान सन्मति प्रभो, महावीर भगवान।
पूर्ण अर्घ्य से मैं जजूँ, बालयती गुणखान।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीमहावीरस्वामिने पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य – **ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा–

चिन्मूरति चिंतामणि, चिंतित फलदातार।
तुम गुणमणिमाला कहूँ, सुखसंपति साकार।।1।।

(चाल-श्रीपति जिनवर करुणा......)

जय जय श्री सन्मति रत्नाकर! महावीर! वीर! अतिवीर! प्रभो!
जय जय गुणसागर वर्धमान! जय त्रिशलानंदन! धीर प्रभो!।।
जय नाथवंश अवतंस नाथ! जय काश्यपगोत्र शिखामणि हो।
जय जय सिद्धार्थतनुज फिर भी, तुम त्रिभुवन के चूड़ामणि हो।।2।।

जिस वन में ध्यान धरा तुमने, उस वन की शोभा अति न्यारी।
सब ऋतु के फूल खिलें सुन्दर, सब फूल रहीं क्यारी क्यारी।।
जहँ शीतल मंद पवन चलती, जल भरे सरोवर लहरायें।
सब जात विरोधी जन्तूगण, आपस में मिलकर हरषायें।।3।।

चहुँ ओर सुभिक्ष सुखद शांती, दुर्भिक्ष रोग का नाम नहीं।
सब ऋतु के फल फल रहे मधुर, सब जन मन हर्ष अपार सही।।
कंचन छवि देह दिपे सुंदर, दर्शन से तृप्ति नहीं होती।
सुरपति भी नेत्र हजार करे, निरखे पर तृप्ति नहीं होती।।4।।

श्री इन्द्रभूति आदिक ग्यारह, गणधर सातों ऋद्धीयुत थे।
चौदह हजार मुनि अवधिज्ञानि, आदिक सब सात भेदयुत थे।।
चंदना प्रमुख छत्तीस सहस, संयतिकायें सुरनर नुत थीं।
श्रावक इक लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख चतुःसंघ संख्या थी।।5।।

प्रभु सात हाथ, उत्तुंग आप, मृगपति लांछन से जग जाने।
आयू बाहत्तर वर्ष कही, तुम लोकालोक सकल जाने।।
भविजन खेती को धर्मामृत, वर्षा से सिंचित कर करके।
तुम मोक्षमार्ग अक्षुण्ण किया, यति श्रावक धर्म बता करके।।6।।

मैं भी अब आप शरण आया, करुणाकर जी करुणा कीजे।
निज आत्म सुधारस पान करा, सम्यक्त्व निधी पूर्णा कीजे।।
रत्नत्रयनिधि की पूर्ती कर, अपने ही पास बुला लीजे।
''सज्ज्ञानमती'' निर्वाणश्री, साम्राज्य मुझे दिलवा दीजे।।7।।

–घत्ता–

जय जय श्रीसन्मति, मुक्ति रमापति, जय जिनगुणसंपति दाता।
तुम पूजूँ ध्याऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पाऊँ निजगुण विख्याता।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीबालयतिमहावीरस्वामिने जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शंभु छंद–

जो पांच बालयति का विधान, श्रद्धा भक्ती से करते हैं।
वे त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, पाकर स्वात्मा में रमते हैं।।
देवर्षिदेव लौकांतिकसुर, होकर अंतिम भव लभते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति भास्कर हो, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

बड़ी जयमाला

जय जय तीर्थंकर बालयती, जय जय जय बाल ब्रह्मचारी।
जय वासुपूज्य जय मल्लिनाथ, जय नेमिनाथ शिव सुखकारी।
जय पार्श्वनाथ जय महावीर, पाँचों तीर्थंकर बालयती।
मैं नमूं अनंतो बार नमूँ, पा जाऊँ पंचम सिद्धगती।।1।।

आत्मा औ तनु के अन्तर को, कर तनु से निर्मम हो जाऊँ।
मैं शुद्ध बुद्ध परमात्मा हूँ, यह समझ स्वयं में रम जाऊँ।।
इन्द्रिय बल आयू श्वांस चार, प्राणों को धर धर मरता हूँ।
निश्चयनय से नहिं जन्म-मरण, फिर भी निश्चय नहिं करता हूँ।।2।।

मैं इन प्राणों से भिन्न सदा, पुद्गल से भिन्न निराला हूँ।
सुख सत्ता दर्शन ज्ञान वीर्य, चेतनमय प्राणों वाला हूँ।।
हे वासुपूज्य ! तव चरण कमल, की भक्ती से यह मिल जावे।
जो खोई शक्ति अनन्त मेरी, तव नाम मात्र से प्रगटावे।।3।।

जिन काम मोह यमराज मल्ल, तीनों को जीत विजेता हैं।
वे मल्लिजिनेश्वर मेरे भी, दुष्कर्म मल्ल के भेत्ता हैं।।
हे मल्लि प्रभो ! मेरे त्रय विध, मल को हरिए निर्मल करिए।
मुरझाई सुखवल्ली मेरी, वचनामृत से पुष्पित करिये।।4।।

भव वन में भ्रमते-भ्रमते अब, मुझको कथमपि विज्ञान मिला।
हे नेमिप्रभो ! अब नियम बिना, नहिं जाने पावे एक कला।।
मैं निज से पर को पृथक् करूँ, निज समरस में ही रम जाऊँ।
मैं मोह ध्वांत को नाश करूँ, निज ज्ञान सूर्य को प्रकटाऊँ।।5।।

पशु बंधन को देखा प्रभु ने, तत्क्षण सब बंधन तोड़ दिया।
राजीमति मोह परिग्रह तज, तपश्री से नाता जोड़ लिया।।
हे भगवन् ! तुम बाह्याभ्यंतर, अनुपम लक्ष्मी के स्वामी हो।
दो मुझे अनंतचतुष्टय श्री, जो अतिशायी सिद्धिप्रिय हो।।6।।

भवसंकट हर्ता पार्श्वनाथ, विघ्नों के संहारक तुम हो।
हे महामना हे क्षमाशील ! मुझमें भी पूर्ण क्षमा भर दो।।
यद्यपि मैंने शिवपथ पाया, पर यह विघ्नों से भरा हुआ।
इन विघ्नों को अब दूर करो, अब सिद्धि लहूँ निर्विघ्नतया।।7।।

महावीर वीर सन्मति भगवन् ! अतिवीर सदा मंगल करिये।
हे वर्धमान भववारिधि से, अब मुझको पार तुरत करिये।।
हे वीर प्रभो ! तब शासन में, मुझको रत्नत्रय निधी मिली।
मैं भक्ति सहित प्रणमूँ तुमको, मेरी मन कलियाँ आज खिलीं।।8।।

हे वीर प्रभो ! मंगलमय तुम, लोकोत्तम शरणभूत तुम ही।
भव भव के संचित पाप पुंज, इक क्षण में नष्ट करो सब ही।।
मैं बारम्बार नमूँ तुमको, भगवन् ! मेरे भव त्रास हरो।
आनन्त्य गुणों की पूर्ती कर, स्वामिन् ! अब मुझे कृतार्थ करो।।9।।

जय जय तीर्थंकर त्रिभुवनपति, जय जय अनुपम गुण के धारी।
जय जय चिच्चिंतामणी आप, चिंतित वस्तू दें सुखकारी।।
जय जय अनमोल रतन जग में, तुम नाम रसायन भी माना।
जय जय तुम नाम मंत्र उत्तम, वह महोषधी भी परधाना।।10।।

यह महामोह अहि के विष को, गारुत्मणि बन अपहरण करे।
भव वन की जन्मलता को भी, जड़ से उखाड़कर दहन करे।।
तुम नाम अलौकिक शक्ति बाण, मृत्यू योद्धा का घात करे।
भव भव में बंधे कर्म शत्रू, उन सबका जड़ से नाश करे।।11।।

तुम नाम मंत्र अद्भुत जग में, यह शिव ललना को वश्य करे।
समरसमय अतिशय सुख देके, कर्मोदय के सब कष्ट हरे।।
तुम नाम आर्त औ रौद्रध्यान, दोनों को जड़ से नाशे है।
वर धर्म्यध्यान औ शुक्लध्यान, के बल से निज परकाशे है।।12।।

माया मिथ्यात्व निदान शल्य, तीनों को दहन करे क्षण में।
जो विषय वासना की इच्छा, उसको भी शमन करे क्षण में।।

चिच्चमत्कारमय चेतन की, परिणति में नित्य रमाता है।
तुम नाम मंत्र सचमुच भगवन् , स्वातम रस पान कराता है।।13।।

मैं शुद्ध बुद्ध हूँ अमल अकल, अविकारी ज्योतिस्वरूपी हूँ।
निज देहरूप देवालय में, रहते भी चिन्मयमूर्ती हूँ।।
इस विध से आतम अनुभव ही, पर से सब ममत हटाता है।
यह निज को निज के द्वारा ही, बस निज में रमण कराता है।।14।।

दोहा

नाम मंत्र प्रभु आपका, करे सकल कल्याण।
'ज्ञानमती' सुखसंपदा, करे अंत निर्वाण।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीरस्वामि-पंचबालयतितीर्थंकरेभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा ! दिव्य पुष्पांजलिः।

-शंभु छंद -

जो पांच बालयति का विधान, श्रद्धा भक्ती से करते हैं।
वे त्रिभुवन पूजित ब्रह्मचर्य, पाकर स्वात्मा में रमते हैं।।
देवर्षिदेव लौकांतिकसुर, होकर अंतिम भव लभते हैं।
कैवल्य ज्ञानमति भास्कर हो, त्रिभुवन आलोकित करते हैं।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

चौबीसों तीर्थंकर प्रणमूं, प्रभु पंच बालयति नमन करूँ।
गौतम स्वामी माँ सरस्वती, को वंदूं पूर्वाचार्य नमूं।।
श्री मूलसंघ में कुंदकुंद आम्नाय सरस्वती गच्छ कहा।
गण बलात्कार में परंपराचार्यों को नित ही नमूं यहाँ।।1।।

यह पंचबालयति का विधान, मैंने रचना की भक्तीवश।
यह रोग शोक दारिद्रय दुःख संकट हरने वाला संतत।।
वीराब्द पचीस सौ उनतालिस भादों अनंत चौदस तिथि में।
यह विधान रचना पूर्ण हुई, होवे मंगलकर सब जग में।।2।।

इस युग के चारित्र चक्री श्री, आचार्य शांतिसागर गुरुवर।
बीसवीं सदी के प्रथम सूरि, इन पट्टाचार्य वीरसागर।।
ये दीक्षा गुरुवर मेरे हैं, मुझ नाम रखा था 'ज्ञानमती'।
इनके प्रसाद से ग्रंथों की, रचना कर हुई अन्वर्थमती।।3।।

महावीरजी अतिशय तीरथ पर, प्रभु पंच बालयति का मंदिर।
अन्यत्र बालयति तीर्थंकर के, मंदिर बहुत बने भू पर।।
तीर्थंकर का शासन जब तक, तब तक विधान तिष्ठे जग में।
सब जैनतीर्थ स्थायि रहें, सुख शांति सुभिक्ष रहे जग में।।4।।

-दोहा-

गणिनी ज्ञानमती रचित, यह विधान सुखकार।
केवल ज्ञानमती करे, भरे सुगुण भंडार।।

चम्पापुरी तीर्थ पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-मेरे देश की धरती.........

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य के जन्म से धन्य हुई है,
चम्पापुर नगरी........।।टेक.।।

जिनशासन के बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्य स्वामी।
उनके पाँचों कल्याणक से, चम्पापुर की धरती नामी।।
वसुपूज्य पिता के साथ जयावति माता धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।1।।

उस चम्पापुर तीरथ का मैं, आह्वानन स्थापन कर लूँ।
सन्निधीकरण कर वासुपूज्य, प्रभु को मन में धारण कर लूँ।।
इस पूजा विधि से पूजनसामग्री भी धन्य हुई है।।
चम्पापुर.।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

-अष्टक (शंभु छन्द)-

जीवात्मा एवं कर्मों का, सम्बन्ध अनादीकाल से है।
बस इसीलिए जीवन व मरण, हो रहा अनादीकाल से है।।
अब जन्मजरामृतिनाश हेतु, जल से प्रभु का अर्चन कर लूँ।
प्रभु वासूपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुरि का वंदन कर लूँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यादर्शन के कारण जीव, अनादी से भव भ्रमण करें।
सम्यग्दर्शन यदि मिल जावे, तब ही उसका उपशमन करे।।
भव आतप के विध्वंस हेतु, चंदन से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षणिक विनश्वर पद प्राप्ती, के लिए सदा अन्याय यहाँ।
आत्मा का लाभ न ले पाया, है अविनश्वर साम्राज्य जहाँ।।
अब अक्षय पद पाने हेतू, अक्षत से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस कामदेव के वश होकर, सच्चे सुख को सब भूल रहे।
जिनराज उसी को वश में कर, आतम अमृत में डूब रहे।।
उस कामबाण के नाश हेतु, पुष्पों से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

है क्षुधावेदनी कर्म सभी के, संग अनादि से लगा हुआ।
उसके ही तीव्र उदय होने पर, नहिं अभक्ष्य का भान रहा।।
वह क्षुधारोग विध्वंस हेतु, नैवेद्य से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों में मोहकर्म, सबसे बलवान कहा जाता।
उससे निजरूप न दिखे अतः, वह अंधकार माना जाता।।

अब मोहतिमिर के नाश हेतु, दीपक से प्रभु पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्मों के नाश हेतु, जिनराज तपस्या करते हैं।
क्रमशः उनके नाशन हेतू, श्रावकजन पूजा करते हैं।।
उन कर्मों की उपशांति हेतु, पूजन में धूप दहन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मैंने अनादि से इस जग में, ग्रैवेयक तक फल प्राप्त किया।
लेकिन सम्यक्चारित्र बिना, नहिं मुक्ति योग्य फल प्राप्त किया।।
अब मोक्षमहाफल प्राप्ति हेतु, फल से प्रभु की पूजन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमुक्ता आदि मिला करके, मैं अर्घ्य सजाकर ले आया।
''चन्दनामती'' प्रभु पूजन कर, चाहूँ तीरथ पद की छाया।।
अब पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु, मैं अर्घ्य चढ़ा प्रणमन कर लूँ।
प्रभु वासुपूज्य की जन्मभूमि, चम्पापुर का वन्दन कर लूँ।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा— **गंगनदी का नीर ले, डालूँ जल की धार।**
देश राष्ट्र में शांति हो, मन में यही विचार।।

शान्तये शांतिधारा

चम्पापुर उद्यान से, पुष्प सुगंधित लाय।
पुष्पांजलि अर्पण करूँ, मन में अति हरषाय।।

दिव्य पुष्पांजलिः

चम्पापुरी तीर्थक्षेत्र के अर्घ्य (शेर छन्द)

भगवान वासुपूज्य जहाँ गर्भ में आये।
आषाढ़ कृष्णा छठ तिथी सुरगण वहाँ आये।।
माता जयावती पिता वसुपूज्य का आँगन।
रत्नों से भर गया करूँ उस भूमि का यजन।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश जहाँ प्रभु का जन्म हुआ।
स्वर्गों में सुरपती का मुकुट स्वयं झुक गया।।
चम्पापुरी नगरी की पूज्यता है इसलिए।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर जजूँ उस भू को इसलिए।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदी चौदश को ही वैराग्य हुआ था।
प्रभु जी ने स्वयं दीक्षा स्वीकार लिया था।।
उस दीक्षाकल्याणक पवित्र भूमि को नमन।
मंदारगिरि उद्यान का है भाव से अर्चन।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रचम्पापुरीनिकटस्थ-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघशुक्ला दुतिया को ज्ञान हो गया।
जिनवर के घातिकर्म का विनाश हो गया।।
मंदारगिरि का पूज्य वह उद्यान मनोहर।
पूजूँ समवसरण का स्थल वह मनोहर।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रचम्पापुरी-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भादों सुदी चौदश को प्रभू मोक्ष पा गये।
सम्पूर्ण कर्म नाश अचल सौख्य पा गये।।

निर्वाण कल्याणक मनाने इन्द्र आ गये।
मंदारगिरि जजूँ जहाँ से सिद्धि पा गये।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथमोक्षकल्याणकपवित्रचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-पूर्णार्घ्य-

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।
चम्पापुरी में माना मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथगर्भजन्मतपकेवलज्ञानमोक्षपंचकल्याणक-पवित्रचम्पापुरी-मंदारगिरितीर्थक्षेत्राभ्यां पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं चम्पापुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

-दोहा-

धर्मतीर्थ वर्तन जहाँ, हुआ वही है तीर्थ।
नमन करूँ उस तीर्थ को, पाऊँ आतम कीर्ति।।1।।

-नरेन्द्र छन्द-

चम्पापुर नगरी में नृप वसुपूज्य राज्य करते थे।
न्यायनीति में दक्ष प्रजा का न्याय किया करते थे।।
धर्मपरायण श्रावक वे प्रभु भक्ति सदा करते थे।
षट्कर्तव्यों में रत रहकर शिवपथ पर चलते थे।।2।।

कर विवाह गुणयुक्त जयावती रानी को वर लाये।
सांसारिक सुख भोग मनोहर जीवनकाल बितायें।।
एक दिवस देवों की टोली ले धनपति वहाँ आये।
रत्नवृष्टि कर इन्द्राज्ञा से नगरी खूब सजाये।।3।।

जान गये तब राजा रानी तीर्थंकर आएंगे।
छः महीने पश्चात् गर्भकल्याणक मनवाएंगे।।
खुशियों में कैसे बीते छह माह पता नहिं पाया।
आखिर इक रात्री में रानी को सपना हो आया।।4।।

सोलह सपनों के फल में वसुपूज्य ने यह बतलाया।
इक तीर्थंकर बालक रानी तेरे गरभ में आया।।
खुशियों में डूबी रानी अपने महलों में रहतीं।
दिक्कुमारियाँ सेवा में आ उनसे प्रश्न उचरतीं।।5।।

धीरे-धीरे बीत गये नव मास घड़ी वह आई।
तीर्थंकर का जन्म हुआ वहाँ बजने लगी बधाई।।
जन्मकल्याणक का उत्सव इन्द्रों ने आन मनाया।
वासुपूज्य यह नामकरण तीर्थंकर शिशु ने पाया।।6।।

वस्त्राभूषण दिव्य पहन प्रभु पलने में झूले थे।
क्रमशः घुटने के बल चलकर देवों संग घूमे थे।।
उनकी मीठी और तोतली बोली जब माँ सुनती।
मानो जग की सारी निधियाँ उनको फीकी लगतीं।।7।।

तीर्थंकर के बाल्यकाल का वर्णन कैसे करना।
इन्द्रपुरी के सुख भी उनके आगे तुच्छ ही कहना।।
बचपन से यौवन काया को वासुपूज्य ने पाया।
मात-पिता के कहने पर भी ब्याह नहीं रचवाया।।8।।

बालयती बन तप करके कैवल्यज्ञान उपजाया।
घाति अघाती कर्म नाश कर मोक्षधाम प्रगटाया।।
चम्पापुर उनके पाँचों कल्याणक से पावन है।
वहीं निकट मंदारगिरी चम्पापुरि का पर्वत है।।9।।

वर्तमान में ये दोनों प्रभु वासुपूज्य के तीरथ।
भव्यात्माओं को दर्शन से प्रगटाते मुक्तीपथ।।

इसीलिए चम्पापुर तीरथ की जयमाल बनाई।
वासुपूज्य तीर्थंकर की पूजन में इसे चढ़ाई।।10।।

एक यही इच्छा है मेरी जन्मभूमि अर्चन में।
रत्नत्रय निधि को पाकर कर पाऊँ जन्म सफल मैं।।
बस तब तक ''चंदनामती'', पूजन का भाव रहेगा।
पूज्य न जब तक बन जाऊँ, प्रभु नाम हृदय में रहेगा।।11।।

मेरा यह पूर्णार्घ्य समर्पण, चम्पापुर तीरथ को।
है पवित्र जिस भू का कण कण, नमन है उसकी रज को।।
दुःखों का क्षय हो प्रभु! मेरे, कर्मों का भी क्षय हो।
मरण समाधीयुत हो जिससे, मेरा सुख अक्षय हो।।12।।

-दोहा-

तीर्थंकर अरु तीर्थ का, प्रस्तुत यह गुणगान।
अर्घ्य चढ़ाकर मैं चहूँ, स्वातम में विश्राम।।13।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीवासुपूज्यनाथजन्मभूमिचम्पापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द

जो भव्य प्राणी जिनवरों की, जन्मभूमि को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृँखला में, ''चंदना'' वे आएंगे।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

पंचबालयति तीर्थंकर की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय जय बालयती, स्वामी जय जय बालयती।
वासुपूज्य मलि नेमि पार्श्वप्रभु, अंतिम वीर यती।। ॐ जय.।।

जिनशासन में चौबिस, तीर्थंकर माने। स्वामी.....
पाँच बाल ब्रह्मचारी, उनमें ही माने।।ॐ जय.।।1।।

चंपापुर के वासुपूज्य प्रभु, प्रथम बालयति हैं। स्वामी.......
दुतिय बालयति जिनवर, मल्लिनाथ प्रभु हैं।।ॐ जय.।।2।।

शौरीपुर में जन्में, नेमिनाथ भगवन्। स्वामी......
तृतिय बालयति माने, बाइसवें जिनवर।।ॐ जय.।।3।।

पार्श्वनाथ भगवान कहाये, चौथे बालयती। स्वामी.......
वाराणसि में जनमे, पंचकल्याणपती।।ॐ जय.।।4।।

वर्धमान वीरातिवीर श्री सन्मति महावीरा। स्वामी......
पाँच नाम युत बालयती हैं, पंचम प्रभु वीरा।। ॐ जय.।।5।।

मात-पिता अरु बन्धू, तुम ही हो मेरे। स्वामी......
चरण शरण में ले लो, द्वार खड़ा तेरे।। ॐ जय.।।6।।

हे जिनवर परमातम, तुम केवलज्ञानी। स्वामी....
सर्व सुखों के दाता, प्रभु अन्तर्यामी।। ॐ जय.।।7।।

दीनबन्धु दुखहरण प्रभू तुम, अरज करूँ तुमसे। स्वामी......
भुक्ति मुक्ति सुख दे दो, छूटूँ भवदुख से।। ॐ जय.।।8।।

पांचों बालयती की, आरति जो करते। स्वामी.......
निश्चित ही ''चन्दनामती'' वे, आतमसुख वरते।।ॐजय.।।9।।